परमसंत पं. फकीर चन्द जी महाराज के सूत्र

1. इन्सान बनो। अपनी नीयत साफ रखो।
2. हमेशा आशावादी रहो।
3. सुमिरन मन को शांत करता है।
4. मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहो।
5. अपने निजी स्वार्थ के लिए औरों को धोखा मत दो।
6. तुम्हारा शरीर हरिमन्दिर है, प्रभु स्वयं इसमें रह रहे हैं। उसको खोजो, वह अवश्य मिलेगा।
7. आत्मा और परमात्मा के मिलाप में मन ही रुकावट है।
8. मन को वश में कर लो, आत्मा स्वयं परमात्मा की ओर खिंची चली जाएगी।
9. सादा ज़िन्दगी और ऊँचे ख्याल रखो।
10. नफ़रत से नफ़रत को नहीं काटा जा सकता।
11. जो वायदा आपने किया है, उसे पूरा करो, यही मानवता है।
12. कर्म के कानून से कोई नहीं बच सकता।
13. जो सलूक आप अपने से नहीं चाहते, वह दूसरों से हरगिज मत करो।
14. अपना बोझ दूसरों पर डालने की कोशिश न करो।

फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट
मानवता-मन्दिर, होशियारपुर।

ईश्वर-दर्शन

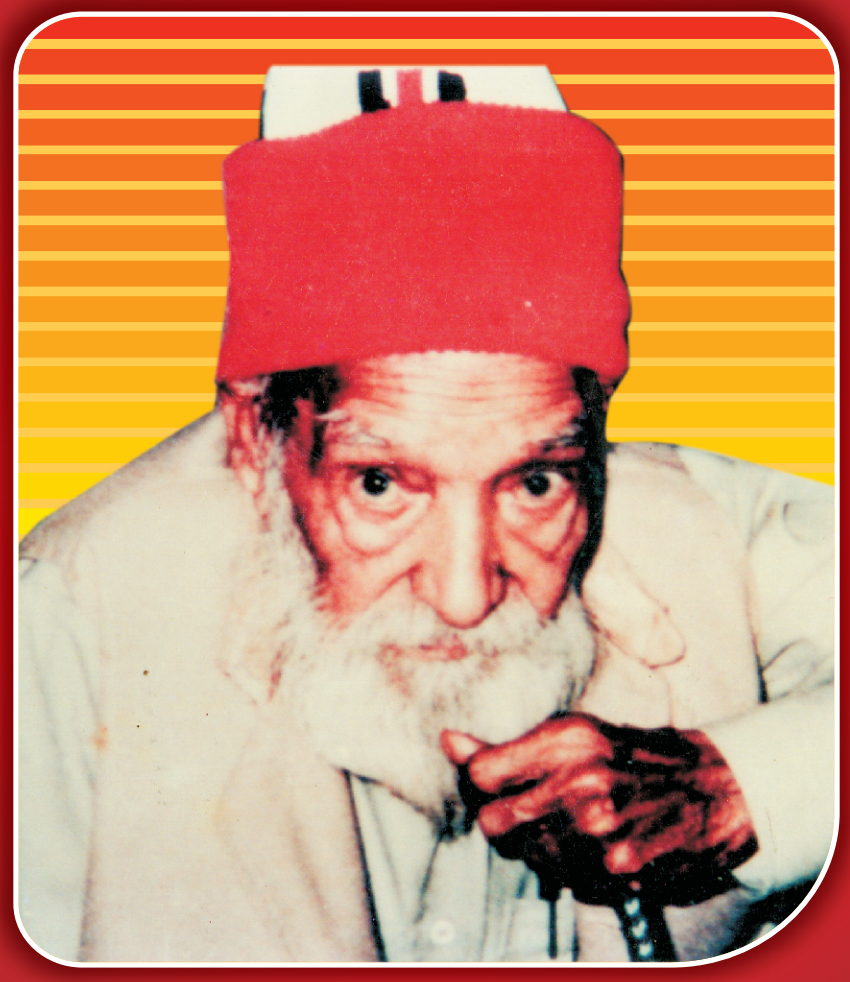

परम दयाल
परमसन्त पं. फकीरचन्द जी महाराज

ईश्वर दर्शन

परम सन्त दयाल फकीरचन्द जी महाराज
होशियारपुर

प्रकाशक :

फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट

होशियारपुर।

पुनर्मुद्रित

दूसरा संस्करण : 2015

विषय सूची

क्रमांक नं.	विषय		पन्ना नं.
1.	चेतावनी		03
2.	ईश्वरी दर्शन		04
3.	ईश्वर का रूप		21
4.	रचना का चक्र		48
5.	रचना का चक्र		55

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परमब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

चेतावनी

घट में दर्शन पाओगे,सन्देह इस में कुछ नहीं।
मैं तो घट में हूँ तुम्हारे , ढूँढ़ लो मुझको वहीं॥१॥
शब्द सुनते हो मेरा, अन्तर में चित को साधकर।
सुरत मेरा रूप है, इसको समझ लेना यही॥२॥
सूक्ष्म हूँ स्थूल हूँ, कारण हूँ कारण से कहीं।
देख दृष्टि को जमाकर, अपने अन्तर में परे॥३॥
चाह जब दर्शन की होगी, देख लोगे आप तुम।
जागते में सोते में, संध्या में मैं हूँ सब कहीं॥४॥
सतपद या सत धाम में, सेवक हूँ सत्पुरुष का।
मेला सेला राम में, इसकी परख आई नहीं॥५॥

--oo--

ईश्वरी दर्शन

(ईश्वर का रूप और कार्य)

शब्द

क्या है ईश्वर किस में ईश्वर, हैं कहाँ रहता है वह।
करता क्या है धरता क्या है, और क्या कहता है वह॥
कुछ दिनों सत्संग हो, ईश्वर की तब आवे समझ।
जो समझता है नहीं, भव सिन्धु में बहता है वह॥
तुमने क्या समझा है उसे, और कैसे आई यह समझ।
जो नहीं समझा जगत की, अग्नि में दहता है वह॥
जितनी जल्दी हो सके, संगत करो, संगत करो।
जिसको सत्संगत नहीं, आपत्ति विपत्ति सहता है वह॥
राधास्वामी ने दया की, दी पद कमल की शरण।
यह शरण हाथ आई जिसके, चैन सुख लहता है वह॥

(शिव)

छोटी उम्र से ख्याल आया था ईश्वर को मिलने का। उस समय पता नहीं था कि ईश्वर क्या है मगर उसको मानता था। उस के मिलने के लिये मैं रोया करता था।

इस शब्द में जो लिखा है उससे दाता दयाल (महर्षि शिव) का क्या भाव है मुझे नहीं मालूम। मैं ईश्वर को मिलने को निकला था। ईश्वर क्या समझ में आया, इसको अपनी समझ के अनुसार आगे कहूँगा। ईश्वर ने मुझको पैदा करके क्या किया? रुलाया, भटकाया!

दुनिया का मुझे पता नहीं मगर मैं अपनी जानता हूँ कि यह विरह थी, प्रेम था, किसी वस्तु की चाह थी।

ईश्वर दुनिया में क्या करता है? चाह पैदा करता है। दुनिया में ईश्वर ने जिसको बनाया उसके अन्दर चाह पैदा कर दी अथवा वासना पैदा कर दी। कोई धनवान होकर इच्छा में फँसा, कोई अधिकारी बनने की इच्छा में फँसा और कोई पुत्रों की चाह में फँसा।

संसार के प्राणियो! मैं आया था उस मालिक की खोज में। मेरा भाग्य मुझको दाता दयाल (महर्षि शिव) के चरणों में ले गया। जो कुछ उन्होंने मुझ को कहा या सन्तों ने कहा, मेरी समझ में नहीं आता था। मैंने उस समय प्रण किया था कि जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। मैंने जो समझा वह बताता हूँ। ईश्वर क्या करता है? ईश्वर ने संसार की रचना की। इसका तो मुझको पता लगा नहीं था कि वह कौन है। सत्संग से पता लगा कि ईश्वर क्या है! इस शब्द की कड़ी है:-

क्या है ईश्वर किस में ईश्वर, है कहाँ रहता है वह।
करता क्या है धरता क्या है, और क्या कहता है वह॥

वह क्या करता है? जितने जीव-जन्तु पैदा करता है सब में चाह या वासना पैदा करता है क्योंकि जब मुझे होश हुआ तो मेरे अन्तर वासना पैदा हो गई। मुझ में ईश्वर से मिलने की वासना उत्पन्न हुई। दुनिया में अनेक प्रकार की वासना जीवों में पैदा हो गई। तुम सब क्या वासना से रहित हो? कोई पुत्र माँगता है, कोई स्वास्थ्य माँगता है, कोई आदर मान माँगता है और कोई धन माँगता है। एक बात तो मेरी समझ में यह आई।

दूसरी बात ईश्वर कहता क्या है। ईश्वर कहता है मुझको पूजो! अपनी पूजा कराता है। जब हम किसी आशा को पूरी होते नहीं देखते तो

हम विवश किसी शक्ति का सहारा लेना चाहते हैं। उसके शरणागत होते हैं। यह भावना है मनुष्य में। जब मनुष्य के अन्तर का, किसी बड़े का, किसी मन्दिर, मस्जिद, गुरु का या मानसिक रूप से उस परमात्मा का सहारा लेता है।

मेरी बात को सुनकर लोग चकित होंगे। मैं अपने जीवन का अनुभव कह रहा हूँ, मुझे पता नहीं कि दाता दयाल के विचार में ईश्वर क्या है। मैं अपनी जानता हूँ कि ईश्वर ने मुझको बनाकर क्या किया? उसने मेरे मन के अन्तर आस भर दी। जब वह आस पूरी न हुई तो सहारा ढूँढ़ा? इसका अभिप्राय यह है कि उसने हमसे अपनी पूजा कराई।

और ईश्वर क्या करता है? हमको सुख-दुख में देखकर खुश होता है। हम संसार में दुखी होते हैं। ऐसी कौन सी और कहाँ ईश्वर की सृष्टि है, जहाँ जन्म-मरण नहीं है। हर एक जीव जन्मता और मरता है। टाँगे टूटती हैं, लोगों को तपेदिक होता है। बीमारियाँ आती हैं मगर वह रचना करना नहीं छोड़ता। कैसे? तुमको ईश्वर ने बनाया है। शास्त्र कहते हैं कि भगवान ने मनुष्य को अपने रूप का बनाया है। तुम ईश्वर के बच्चे हो। तुम अपनी खुशी के लिये सन्तान पैदा करते हो। क्या कभी सोचा है कि यह बच्चा पैदा होकर क्या दुख उठायेगा। भूखा मरेगा या बीमार होगा या और कोई कष्ट इसे होगा या Accident (आकस्मिक घटना) में आयेगा। कभी ख्याल आता है? एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः बच्चे पैदा करते जाते हो। किस के लिये? अपनी ही खुशी के लिये! सोचो मैं क्या कह रहा हूँ।

ईश्वर और क्या करता है। जीव जन्तुओं को उत्पन्न करके उसमें आस भर देता है और फिर अपनी पूजा कराता है। फिर अपनी रचना से खुश होता है। उसको अपने आधीन रखना चाहता है। तुम्हारे बच्चे होते हैं। तुम चाहते हो कि तुम्हारे आज्ञाकारी बन कर रहें। जहाँ बच्चे ने कहना नहीं माना थप्पड़ पर थप्पड़, गाली पर गाली देते हो। क्रोध करते हो, तो ईश्वर यह करता है। इस दुनिया को बनाकर हमको आशाओं में फँसा दिया, अपनी पूजा कराई और हमको रुलाया। यह बड़े-बड़े भक्त जो हुए हैं, क्या वह विरह में रोये नहीं? गुरु नानक साहब के जीवन चरित्र को पढ़ो! वह विरह में रोया करते थे। भक्तों के इतिहास पढ़ो! वह विरह में रोते थे। तुम को ईश्वर ने रुलाया। आशा तुम्हारे अन्तर में पैदा कर दी। कोई आशा पूरी हो गई, तुमको खुशी हो गई। यदि पूरी न हुई तो दुख हुआ। ईश्वर ने इस दुनिया में दुख-सुख और आशाओं का बोझ हमारे सिर पर रख दिया। किसी के अन्तर प्रबल काम का अंग पैदा कर दिया। वह किसी स्त्री के पीछे दौड़ता है। चाहता है कि उसका विवाह उसके साथ हो जाये। किसी में कोई और आशा भर दी। ईश्वर यह करता है।

जब ईश्वर ने देखा कि मेरी दुनिया जो पैदा की हुई है। यह मेरे कहने में नहीं चलती तो उस समय ऐसे महापुरुष पैदा कर दिये जो जीवों को उसकी सेवा, उसके नियमों पर चलने के लिये शिक्षा देते रहे। जो ईश्वर करता है वही हम तुम करते हैं। जब हमारा लड़का बुरे काम करने लगता है तो हम उसको शिक्षकों के पास भेजते हैं। कहते हैं कि उसको मति दो कि घर में शान्ति से रहे। मां-बाप का कहना माने।

मेरा सारा जीवन सच्चाई की खोज में व्यतीत हुआ है और इस सच्चाई की खोज में उस अनुभव के आधार पर यह कह दूँ कि इस संसार को रचने वाला बड़ा निर्दयी है तो गलत नहीं होगा। तुम निर्दयी हो कि नहीं? बच्चे पैदा करते हो। क्या सोचते हो कि इसके साथ क्या बीतेगी? आप तो संसार में दुखी हो ही, सन्तान पैदा करके उनको दुख की खान में डालते हो।

इस पर भी फिर क्या करते हो? उनके लिये तड़पते हो, दुखी होते हो। ऐसे ही ईश्वर भी जब उसकी सन्तान दुखी हो जाती है तो दुख महसूस करता है। यदि वह दुख महसूस न करता होता तो अवतार उस तत्व को नष्ट करने क्यों आते? जो दुनिया में उन नियमों पर नहीं चलते और ईश्वर की जो आज्ञायें हैं, उनको नहीं मानते तो फिर वह अवतार पैदा कर देता है जो उस गन्दे तत्व को नष्ट कर देता है। जैसे कृष्ण का अवतार हुआ, राम का अवतार हुआ। तुम क्या करते हो? ईश्वर न करे कि तुम्हारा लड़का तुम्हारा विरोधी हो जाये तो तुम उसको फारगती देते हो, निस्सम्बन्ध हो जाते हो। मुकद्दमेबाजी होती है क्योंकि गवर्नमेंट का कानून है कि कोई किसी को मार नहीं सकता। इसलिये कोई ऐसा कार्य नहीं करता मगर आजकल तो कानून को भी कोई नहीं देखता। कई लड़कों नें मां-बाप को मार दिया। कई पिताओं ने पुत्रों को मार दिया। अब सवाल पैदा होता है:-

क्या है ईश्वर, किस में ईश्वर, है कहाँ रहता है वह॥

ईश्वर क्या है? तुम्हारी तरह एक महापुरुष है। उसकी देह भी है, उसका मन भी है और उसकी आत्मा भी है। मनुष्य को उसने अपने रूप का बनाया। जो गुण उसमें हैं वह हम में भर दिये। हम में देह, मन और

आत्मा है। उसकी देह को विराट कहते हैं। उसके मन को *अव्याकृत* कहते हैं। उसकी आत्मा को *हिरण्यगर्भ* कहते हैं। जिस तरह तुम इस शरीर में रहते हो यह तुम्हारी देह है, इसके अन्तर मन है, इसके अन्तर आत्मा है इसी तरह से सारे भूलोक के अन्तर उसका देह यह भौतिक पदार्थ (स्थूल माद्दा) है, सूक्ष्म पदार्थ है और कारण आत्मा है। वह एक बड़ा भारी पुरुष है।

वह पैदा कैसे करता है? जैसे तुम अपने संकल्प से कोई वस्तु बना लेते हो। इसका ज्ञान ऐ सत्संगियो! तुमसे हुआ। हाल की घटना है, मैं पहाड़ी क्षेत्र में धर्मशाला गया। वहाँ सतपाल नामी एक युवक है। वह कहता है कि बाबाजी! मैं नदी पार कर रहा था। ख्याल था पानी थोड़ा है। जब बीच में पहुँचा तो ऊपर से और पानी आ गया। मैंने आपको याद किया तो नदी के किनारे पर आपको खड़ा हुआ देखा। मैंने पुकारा दयाल फकीर! मुझे बचाओ! वह आगे कहता है कि आप आये और आपने मुझको पानी से निकाल कर खड़ा कर दिया। अब ऐ संसार के प्राणियो! मैं सच कहता हूँ मैं वहाँ उसको बचाने को नहीं गया। वह कौन था? वह उसके अपने मन का ही विश्वास था जिसके ख्याल ने फकीर चन्द को बुला लिया और उस फकीर चन्द ने उसको नदी से निकाल दिया।

जिस तरह से हम अपने संकल्प से एक वस्तु बना कर उसको अपने काम में ले आते हैं, इसी प्रकार भगवान ने या ईश्वर ने अपने संकल्प से सृष्टि पैदा की है। जब इस ख्याल में मनुष्य के अन्तर में घनापन आ जाता है तब वह ख्याल साक्षात रूप बन जाता है। शास्त्र कहते हैं कि सृष्टि की आदि में मैथुनी सृष्टि नहीं थी। अब तो स्त्री पुरुष भोग करते है तब बच्चा पैदा होता है। आरम्भ काल की जो रचना है वह

संकल्प की रचना है। मनोमय जगत है। जब उसमें कमजोरी आ गई तब मैथुनी सृष्टि की प्रथा संसार में उत्पन्न हुई। मैथुनी सृष्टि के भी कई अंग हैं। मोर-मोरनी भोग नहीं करते। मोर मस्ती में आकर जब नाचता है उसकी आँखों से मस्ती के आंसू गिरते हैं। उनको मोरनी पकड़ लेती है। फिर अंड़े देती है और वह मोर बन जाते हैं। यह ईश्वर की सृष्टि है। यह ईश्वर की सृष्टि का नियम है।

फिर ईश्वर का रूप मैंने क्या समझा? यही कि वह हमारी तरह एक बड़ा पुरुष है। विराट जिसकी देह है, अव्याकृत जिसका मन है और हिरण्यगर्भ जिस की आत्मा है। यह सृष्टि है।

जब मैं इस भावना वश दाता दयाल के चरणों में गया था तो उन्होंने मुझको ईश्वर की सृष्टि से निकलने का गुर बताया था। क्यों निकला? ऐसे राज में क्या रहना जहाँ हमेशा ही जन्मते मरते रहें, जहाँ हम वासनाओं के आधीन उनके चक्र में आकर नित नये जन्म धारण करते रहें। संतों ने इस ईश्वर से विद्रोह (बगावत) कर दिया मगर विद्रोह किया सम्मान पूर्वक होकर। ऐसा गुरु निकाला कि हम उस ईश्वर की सृष्टि से सदा सदा के लिये निकल जायें। न रहे बाँस न बजे बाँसुरी! यह है संतों का मार्ग!

तुम लोग सत्संग में आये हो। क्या उस ईश्वर की सृष्टि से निकलने के लिये आये हो? तुम लोग तो ईश्वर की सृष्टि को अधिक अच्छी बनाने के लिये आये हो कि तुम्हारा यह जो ईश्वर की सृष्टि का जीवन है यह सुख दाई हो जाये। शास्त्र कहते हैं कि इस रचना में या त्रिगुणात्मक जगत में या द्वन्द के जगत में सुख के साथ दुख रहता है। प्रकाश के साथ घोर अंधेरा रहता है। यह रचना ही ईश्वर ने ऐसी बनाई है जहाँ कोई भी

सुखी नहीं है। न कोई सुखी रह सकता है। इसका प्रमाण मुझे कैसे मिला? मैंने बड़े-बड़े ईश्वर भक्तों के जीवन चरित्र पढ़े हैं। कोई किसी रोग में मरा, कोई किसी रोग में मरा। स्वामी राम कृष्ण परम हंस को कैंसर हो गया। हुज़ूर बाबा सावन सिंह को अन्तिम जीवन में बड़ा कष्ट हुआ। माधो प्रसाद जी महाराज जी अपने -आपको राधास्वामी मत का आचार्य कहा करते थे, सात वर्ष चारपाई पर पड़े रहे। हाथ पैरों में और मुँह पर छाजन था। गोस्वामी तुलसी दास रामायण के रचियता, पिछले जीवन में तीन वर्ष बड़े बीमार रहे। तब मैं सोचने को विवश हुआ कि जब इन बड़े-बड़े भक्तों को भी कष्ट हुये तो सिद्ध हो गया कि ईश्वर ने इन भक्तों को जो उसका स्मरण करने वाले थे उनको भी नहीं छोड़ा। क्यों नहीं छोड़ा? क्यों हम दुख - सुख उठाते हैं? क्योंकि हम ईश्वर के नियम को या आज्ञा को नहीं मानते। शास्त्र कहते हैं:-

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।

जो जस कीन्हसु तस फल चाखा॥

ईश्वर का नियम क्या है? वासना। यदि इन महात्माओं को कष्ट हुआ या दुनिया को कष्ट हुआ या मुझे कोई कष्ट हुआ या होगा वह क्यों हुआ, क्यों कि अपनी वासना को ठीक नहीं रखा। यही कारण है कि मैं इस गुरु पदवी पर आकर सत्य प्रिय हो गया और स्पष्ट कह दिया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। परसों एक पत्र आया। तुलसी दास नाम का एक लड़का इटारसी में है। उसका बाप मरा। उसके गले में फोड़ा था। जब पिछली बार मैं वहाँ गया तो डाक्टर ने कहा कि कैंसर है। उसी रोग में मर गया। मरने से दो दिन पहिले कहा कि बाबा (मैं फकीर) आया है। कहते हैं कि दो दिन बाद ले जाऊँगा। मरने से तीन चार घंटे पहिले

उसने अपनी स्त्री को बुलाया और कहा कि बाबाजी (फकीर चन्द) आ गये हैं, हवाई जहाज ले आये हैं, उसका नं. था ३५६१०। वह स्त्री से कहता है कि मैं तो जा रहा हूँ। तुम भी जाओ। कीर्तन हो रहा था। वाणी का पाठ हो रहा था। उसका शरीर छूट गया। उस लड़के ने मुझको लिखा। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तू क्या उसको लेने गया था। मैं सच कहता हूँ कि मैं नहीं गया।

आज मैं हैरान होता हूँ इस मौजूदा गुरुइज्म पर! जिन महात्माओं ने इस तरह का पर्दा रख कर कि हाँ हम जाते हैं तुमको अन्त समय लेने के लिये, क्या उन्होंने अपने कर्म को ठीक बनाया? क्या उन्होंने उन लोगों से धन नहीं लिया? क्या इनसे मत्थे नहीं टिकवाये? क्या डेरा धाम, मंदिर मस्ज़िद नहीं बनवाये? इस कर्म के चक्र से शायद वह बच गये हों यह उनके अन्त:करण पर निर्भर है। मैं अपने अन्त:करण को मलीन नहीं करना चाहता ताकि इस धोखे के कर्म का फल मुझको न मिले। यह मैं नहीं कहता कि वह न जाते हों जाते होंगे। दाता दयाल गये होंगे। बाबा सावन सिंह गये होंगे! साहब जी महाराज गये होंगे मैं नहीं जानता, न मैं जाता हूँ। क्यों कहता हूँ क्योंकि ईश्वर ने इस दुनिया में रचना की तो सबसे पहिले यह काम किया-सत्यता का व्यवहार सच बोलो! सच बोलना हर एक धर्म की शिक्षा है। तो मैंने सत्य बोला ताकि मेरी आत्मा के ऊपर कोई बोझ न आये। आज दाता दयाल का कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझको ईश्वर के जाल से निकालने के लिये यह गुरु पदवी दी थी।

ईश्वर का जाल क्या है? जिस जाल से उसने दुनिया को रचा है,

वह है वासना, आशा। इसलिये मैं उन जीवों को जो इस प्रवृति मार्ग में सुखी रहना चाहते हैं यह कहता हूँ कि अपने तईं सच्चे बनो(Be true to yourself)।

अपनी आत्मा को सच्चा बनाकर रखो। अपने निज प्रयोजन, निज आदर मान और धन के लिये हेरा-फेरी मत करो। यदि करोगे तो ईश्वर के नियम के उल्लंघन के दंड से तुम बच नहीं सकते। तुम कहते हो अमुक भक्त था। तुम्हें क्या पता कि वह भक्त था। प्रत्यक्ष में उसने मत्थे पर टीका लगाया, गले में माला डाली मगर उसकी वासनायें क्या थीं, इसका तो किसी को कोई पता नहीं है। मनुष्य के अन्तर उसकी क्या-क्या वासनायें हैं, उसका किसी को पता नहीं है। तुम बताओ तुम अपनी गुप्त या अपने मन की बातों को किसी को कहते हो। स्त्रियाँ अपने पति से पर्दा रखती हैं। पति अपनी स्त्री से पर्दा रखता है। भाई-भाई से परदा रखता है। कौन अपने मन की बात किसी को कहता है? तो ईश्वर ने एक नियम बना दिया है न्याय का। जो कुछ तुम करोगे वह तुम भरोगे।

जैसी करनी वैसी भरनी।
जैसा खयाल वैसा हाल।

ईश्वर की तो यह रचना है। मुझे इस से निकलने का भेद नहीं मिलता था। मुझको किसने निकाला? आप लोगों ने जब सन् १९१९ ई. में मैं उस धुन में था अर्थात् ईश्वर के देखने की धुन में था तो दाता दयाल के आगे ९ घंटे रोया।

गुरु मोहि अपना रूप दिखाओ।

इस समय उन्होंने यह गुरु पदवी मुझे देते हुये कहा था फकीर तुम में ९९ ऐब हैं मगर एक सच्चाई है। अभी तू इस योग्य नहीं है कि ईश्वर

के रूप को देख सके मगर मैं आज्ञा देता हूँ कि सत्संग कराया करना, नाम दान दिया करना। तुझको उस मालिक के असली रूप का दर्शन सत्संगियों के रूप में मिलेगा। मुझे आप लोगों से यह ज्ञान हुआ कि मैं किसी के अन्तर जाता नहीं। यह कौन जाता है? उनकी वासना जाती है। धर्मशाला शहर में जिस घर में गया हुआ था वहाँ भगत राम एक प्रोफैसर है। जब वह कॉलिज में पढ़ा करता था तो मेरे पास सत्संग में आया करता था। वाणी का पाठ किया करता था अब वह प्रोफैसर हो गया। उसने मुझको आने को विवश किया। वहाँ चला गया।

वह कहता है बाबा जी! शाम को सत्संग सुना। रात को अभ्यास में बैठ गया। शरीर शून्य हो गया। अन्त में प्रकाश हुआ जिसके तेज को मैं सहन नहीं कर सका। समझा कि मेरे प्राण निकल जायेंगें, डर गया। वह कहता है कि उस समय आप आ गये। मैंने उसको थपथपाया, हौसला दिया कि भई! यदि आगे चला जाता तो अच्छा था। तू तो डर गया। जब सुबह इसने मुझ से कहा तो मैं अपने अन्तर गया कि क्या तू ने उससे अभ्यास में कहा था। नहीं, मैंने कुछ नहीं कहा।

मैं तुमको कहता हूँ आज कल के गुरुमत वालों को। हम महात्माओं ने तुम्हारी आँखों में मिट्टी डाली हुई है तुमको पशु बनाया हुआ है। अपनी जीविका का, अपने मान का अपने डेरे और धामों को बनाने का तुमको साधन बनाया हुआ है। मेरे जिम्मे डयूटी है:-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगा कर, लेजा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।

तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

जो मैं मुँह से वचन कहता हूँ मेरा यही नाम दान है। यह सत्यता का वर्णन इस लिये कर रहा हूँ और इस मानवता मंदिर की बुनियाद इसीलिये ही रखी है सत ज्ञान दाता की हैसियत से कि संसार के प्राणियों को सच्चा ज्ञान मिले, सच्चा भेद मिले कि असलियत क्या है मगर इस ईश्वर का जाल इतना प्रबल है कि तुमको इस माया के जाल से, संकल्प की दुनिया से निकलने नहीं देता। तुम जो आये हो मुझे भी इसी में घसीटने की कोशिश करते हो मगर मुझ पर तो दया हो गई। अब मैं तुम्हारे घसीटने में नहीं आता। घसीटने में तो तब आता जब मुझे अपने मान, धन की इच्छा होती अथवा यश की या गुरु कह लाने की लालसा होती। तब शायद तुम्हारे जाल में फँस जाता। अब मैं तुम्हारे जाल में नहीं फँसता। क्यों? क्यों कि मैंने सतगुरु की संगत की हुई है। किस सतगुरु की? एक तो दाता दयाल (महर्षि शिव) दूसरे आप लोग मेरे सतगुरु हैं जो मुझको गुरु मानते हैं। इन्होंने मुझको इस जाल से निकालने के लिये विवश किया हुआ है। दाता दयाल का शब्द है:-

तूने सतगुरु किया न संग, काल से कौन बचायेगा।

आप लोग मेरे सत्संग में आते हैं। मेरा सत्संग सुनने के लिये बड़ा विशाल हृदय चाहिये। मैं डाक्टर हूँ। सूक्ष्म शरीर का आपरेशन करता हूँ. जिस तरह तुम इस शरीर का आपरेशन कराने से घबराते हो इसी तरह जो तुम्हारे सूक्ष्म शरीर में अनेक प्रकार के रोग भरे हुये हैं मैं अपने वचनों से उन रोगों को निकालता हूँ। तुम्हारे मन को नश्तर लगाता हूँ मगर आपरेशन कराने को बड़े साहस की आवश्यकता है।

मुझे सतगुरु का सत्संग मिला जिसने इस ईश्वर की रचना से निकल जाने का मुझको भेद दिया। कैसे मिला भेद? जब तुम लोगों ने कहा कि तुम्हारे अन्तर तुम्हारी सुरत चढ़ाता हूँ, मरते समय ले जाता हूँ, जाग्रत में तुम्हारे सामने प्रगट होता हूँ और मैं नहीं होता था, रूप बनाता था, बातें करता था, वह मेरा अपना ही मन था। यही मेरे मन का हाल था। राधास्वामी दयाल की वाणी है:-

काल ने पूजा आप कराई।
काल ने रक्षक कला दिखाई॥

अब जो बाबा फकीर उस सतपाल को नदी के किनारे पर ले गया वह फकीर चन्द तो था नहीं, फिर वह कौन था। वह उसका अपना ही मन रूपी काल था। जो बाबा फकीर मरने वाले को हवाई जहाज लेकर ले गया वह कौन था। वह उसका अपना ही मन था जो काल रूपी फकीर चन्द बन कर वहाँ गया था। भगत राम के अन्तर जिस फकीर चन्द ने प्रकट होकर कहा कि साहस कर। वह कौन था? वह उसकी अपनी ही आत्मा थी। इस समझ से मैं अब ईश्वर का क्या रूप समझता हूँ। यह संसार ईश्वर का ही रूप है। कुल विराट पुरुष ईश्वर का रूप है। जितनी सूक्ष्म रचना है सब ईश्वर का रूप है। जितनी कारण रचना है सब ईश्वर का रूप है।

उससे निकलने के लिये क्या आवश्यक है? तुम्हारा आपा, जो वास्तव में तुम हो, जिसको लाकर इस शरीर में उसने भरती किया हुआ है, क्या है? वह है तत्व। जब वह अपने आप में होता है अर्थात् ईश्वर की रचना में नहीं आता वह अपने -आप में अजर -अमर है, अविनाशी है मगर उसका अनुभव तो तुम तब कर सकोगे जब तुम ईश्वर की सृष्टि

से निकलोगे। फिर ईश्वर की सृष्टि से निकलने के लिये क्या बात आवश्यकह ै?श ारीरके भ ान-बोधय ाभ ावनाक ोछ ोड़ो!म नके संकल्पों को छोड़ो और प्रकाश रूपी जो तुम्हारी आत्मा है उसको छोड़ो। तब उसके परे जाओगे। उसके परे क्या है? वहाँ है तुम्हारा अपना आपा, तुम्हारा अपना ही स्वरूप। तुम स्वयं हो।

मैं आप लोगों की बदौलत इस ईश्वर की सृष्टि से साधन के समय निकलता रहता हूँ। जब इस शरीर में आता हूँ तो मुझे यह ज्ञान होता है कि इस सृष्टि में दुख-सुख, भलाई-बुराई, पाप-पुण्य,धर्म-कर्म सब मौजूद हैं। उसमें रहता हुआ अपनी नीयत को शुद्ध रखता हूँ। अपनी आशा को शुद्ध रखता हूँ। अपने निज प्रयोजन निज आदर मान के लिये कोई काम नहीं करता और न कुछ सोचता हूँ। जो पिछले कर्म हैं उनका भोग भोगता हूँ। जितनी मेरी बुद्धि थी ईश्वर के जानने के लिये कि ईश्वर क्या है वह मैंने संकेत रूप में सादा शब्दों में आपको वर्णन कर दिया।

कुछ दिनों सतसंग हो, ईश्वर की तब आवे समझ।
जो समझता है नहीं, भव सिन्धु में बहता है वह।

जिसको यह ज्ञान नहीं हुआ, ईश्वर की समझ नहीं आई, वह अपने अज्ञान में आकर दौड़ - धूप करता है। खेल तो सारा उसके अपने मन का है मगर वह यह समझ कर कि कोई बाहर का देवी देवता, कोई बाहर का गुरु, तुम्हारे अन्तर में प्रकट होता है, इस भ्रम में आकर कोई कुछ उपाय करता है कोई कुछ। मैं सत्संग कराता हूँ। क्या करता हूँ? आपको सच्ची समझ देता हूँ, सच्चा विवेक देता हूँ। सच्चा भेद देता हूँ। यही राधास्वामी मत है। जो तुम लोगों ने राधास्वामी मत समझा हुआ है,

वह गलत है। बाहरी गुरु का काम है तुमको भेद देना, समझ देना और विवेक देना। यह है गुरुमत। कहा है :-

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में, गुरु होय जीव चिताये।
जिन-जिन माना वचन समझ के, तिन को संग लगाये॥

तुमने क्या समझा? सत्संगों में जाते हो। नित्य सत्संग करते हो। राधास्वामी मत वालो या दूसरे मत वालो! क्या सीखकर जाते हो? यदि वृत्ति एकाग्र हो तो सत्संग में समझ मिलती है, विवेक मिलता है यही रामायण कहती है:-

बिन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

जब सत्संग में कुछ न कुछ समझ मिल जायगी, तुम्हारे मानसिक दुखों का यदि पूर्ण रूप से नहीं तो कम से कम पचास प्रतिशत, सत्तर प्रतिशत तुमको लाभ हो जायेगा। तुम्हारी बहुत सी कल्पनायें जिन में हाय-हाय करते हो, समाप्त हो जायेंगी।

जब तक मन में रहते हो, मन सहारा चाहता है। तुम वहाँ (सत की अवस्था में) तो जा नहीं सकते। मन को सहारा चाहिये। तुम जिस - जिस धर्म के हो उसी का सहारा लो। हिन्दु हो तो राम का शब्द ले लो, कृष्ण का सहारा ले लो, मुसलमान हो तो अली का सहारा ले लो, जैन हो तो उसका सहारा ले लो, बौद्ध हो तो बुद्ध का सहारा ले लो। यह सहारे हैं। तुम्हारा अपना ही सहारा काम करता है।

यह व्यक्ति बैठा हुआ है। इसकी टाँग टूट गई थी। यह कहता है, बाबा! तू मेरे साथ छः महीने रहा। अब मैं तो गया नहीं था। कौन गया

था? वह उसका सहारा था। इसलिये इस काल की रचना में तुमको सहारा मिलना आवश्यक है। अपने-अपने विश्वास का सहारा लो मगर एक का सहारा लो। जो बहुत घरों का मेहमान होता है उसको कोई नहीं पूछता। इसलिये एक का सहारा लो और यह विश्वास कर लो कि वह तुम्हारे अपने अन्तर रहता है। गुरु का सहारा है वह भी एक सहारा है। गुरु तुमको इस भवसागर से पार जाने की शिक्षा देता है।

जिस पर गुरु की दया होती है वह इस भवसागर से बच जाता है। सतगुरु की दया इस भवसागर से बचाने के लिये है। यह मैं क्यों कहता हूँ। इसलिये कि लोग अपने विश्वास के अनुसार मुझे गुरु मान कर मेरा सहारा लेते हैं। मेरा रूप उनके काम कर जाता है मगर मुझे पता नहीं होता। मैं गुरु बनने की लालसा से दुनिया में नहीं आया था। मैं गुरुमत समझने के लिये आया था कि मेरा घर कहाँ है। उस मालिक के मिलने का घर क्या है। अपने अन्तर मन आत्मा और शारीरिक भान-बोध, मानसिक भान-बोध, प्रकाश, आनन्द की तीनों अवस्थाओं को छोड़कर अपने रूप में चलना। जिस तरह इस शरीर के अन्तर शारीरिक भान कई प्रकार के हैं। मन के अन्तर अनेक प्रकार के विचार भाव हैं, आत्माके अ न्दरअ नेकप्रकारके अ ानन्दहैंइ सीप्रकारसेअ पने अनुभव के आधार पर कह देता हूँ कि हमारा अपना जो सत का रूप है। उसके उस रूप का भी वैसे ही फैलाव है जैसा हमारे अन्तर शारीरिक भान-बोध का फैलाव है। जैसे मानसिक विचारों का फैलाब है इसी तरह निज स्वरूप की जो अवस्था है उस का फैलाव है। एक तो निज स्वरूप मेरा है जो मेरे अन्तर में मेरा आपा(Self) है और एक बड़ा

स्वरूप (Self) है जिसको सन्त सतपद कहते हैं, अलख अगम कहते हैं। मैं उसको देखता हूँ। वहाँ क्या है? यह कहने -सुनने की बात नहीं है। अनिवर्चनीय है। यह करनी का भेद है।

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि विचार।
कथनी तज करनी करे, तब पावे कुछ सार॥

मैंने जितनी करनी की, इस मन के चक्र में ही करता रहा। इस मन के चक्र से निकल नहीं सकता था। इस मन के चक्र से निकालने के लिये मुझे दाता दयाल ने यह काम दिया था और कहा था कि तुझको सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में हो जायेंगे। अब यह सतगुरु कौन है? वह सतगुरु ज्ञान है। क्या ज्ञान? यह कि सब रचना ईश्वर की है। इस में:-

काल ने रची त्रिलोकी सारी।
दयाल ने रचा सतलोक संभारी॥

वह जो ईश्वर है वह ऊपर एक शक्ति है जहाँ देह, मन और आत्मा नहीं , एक तत्व है। उसकी जो अवस्था है उसमें इस समय तेरी पिछली आयु का साधन होता है।

मैं आप को उस पवित्र विभूति का शब्द सुनाता हूँ जिसने अपने सतगुरु स्वामी शिवदयाल सिंह जी महाराज की इतनी सेवा की कि चक्कियाँ पीसीं, गर्मियों में ढाई-ढाई मील से उनको पानी लाकर पिलाया था। जो वेतन मिलता, पोस्ट मास्टर जनरल थे, कुल सतगुरु के सामने रख देते। वह दो मुट्ठी भरकर उनकी स्त्री को दे देते, बाकी सब दान में चला जाता। वह बताते हैं कि सतगुरु कहाँ रहता है:-

सखी री मोहि क्यों रोको।
मैं तो जाऊँगी सतगुरु पास॥
सतगुरु मेरे अधर विराजें।
वहीं सन्तन का वास॥
पिंड अंड ब्रह्मण्ड के पारा॥
सत अलख अगम निवास।
जगत जीव सब हुये हैं बाबरे।
नहीं करें चरन विश्वास॥ आदि आदि०

--00--

ईश्वर का रूप (लगातार)

मुझको बचपन से ईश्वर से मिलने की चाह थी। मुझको ही नहीं, सब को रहती है। ऋषियों, मुनियों, पीरों तथा पैगम्बरों को रहती है। जब मैं इस रास्ते पर आया था तो सतगुरु के रूप में दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज को ईश्वर मानकर पूजता था। उस समय उन्होंने मेरे भाव को वहाँ से हटा दिया था। संत और फकीरों की महिमा बताई थी. एक शब्द में मुझे लिखते हैं:-

मैं नहिं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहिं जानूं।
मैं फकीर का नाम दिवाना, सबसे बढ़ कर मानूं॥
मेरे साध हैं शब्द विवेकी, सन्त वंश कुल शोभा।
चरन कमल मस्तक पर धारूं, प्रेम मगन मन क्षोभा॥
एक घड़ी साधू की संगत, कटै मोह जम फाँसी।
मेरी नजर में साधु फकीरा, सत चित आनन्द रासी॥

जो फकीर का दरशन पाऊँ, चरन सरोज पखारूँ।
आप तरूँ उसकी शरनाई, औरों को संग तारूँ॥
साधु की संगत गुरु की सेवा, सहजहि काम बनावे।
जिस पर साध की दृष्टि पड़ गई, फिर जग योनि न आवे॥
तरुवर सरवर मेह का पानी, औरन को सुखकारी॥
तैसे ही सुन मेरे फकीरा, साधू पर उपकारी।
तू फकीर बन तू फकीर बन, तू फकीर बन भाई॥
मैं भी तरूँ फकीर चरन लग, ऐ फकीर! सुखदाई।
सुन ले कथा सुनाऊँ तुझको, प्रगटे विमल विवेका।
जीव अनेक रहें जग अन्दर, पर फकीर कोई एका॥

फिर फकीर की महिमा क्या है। उसी शब्द में एक कड़ी है:-

जिस पर साधु की दृष्टि पड़ गई, फिर जग योनि न आवे॥

ब्राह्मण घराने में जन्म लेने और ईश्वर उपासक होने के कारण यह सन्त मत मेरे लिये बिल्कुल नई बात थी। तुम स्वयं सोचो कि जो ईश्वर भक्त हो, मन्दिर का पुजारी हो, यदि उससे यह कह दिया जाये जो दाता दयाल ने मुझको कहा तो उसके मन की क्या दशा होगी।

मैं नहिं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहिं जानूं।
मैं फ़कीर का नाम दिवाना, सब से बढ़कर मानूं।
मेरे साधु हैं शब्द विवेकी, सन्त वंश कुल शोभा।
चरण कमल मस्तक पर धारूँ, प्रेम मगन मन क्षोभा।
एक घड़ी साधू की संगत, कटे मोह जम फाँसी।
मेरी नजर में साधु फकीरा, सत चित आनन्द रासी।

साधु की महिमा क्यों गाई गई है। कहते हैं :

मैं भी तरूँ फकीर चरण लग, ऐ फकीर! सुखदाई।

इन विरोधी बातों के कारण मेरे चित्त में संशय उत्पन्न होने लगे कि मैं कहाँ फँस गया क्योंकि मैं तो वर्षों रोया था। एक दिन जब २४ घन्टे रोया, वह मेरा एक दृश्य था जो मुझको दाता दयाल चरणों में ले गया। वहाँ यह राधास्वामी मत मेरे भाग्य में आया। चूँकि इनकी वाणियों में खण्डन था, इनको मैं सहन नहीं कर सकता था मगर दाता दयाल को मैं छोड़ नहीं सकता था। तुम ही बताओ! मेरे दिल की उस समय क्या दशा रही होगी!

उस समय मैंने यह प्रण किया था कि उस रास्ते पर चलूँ और जो कुछ मेरी समझ में आयेगा वह मैं संसार को बता जाऊँगा। यह मेरा कर्म भोग है। इस कर्म के क्रम में तुम सरसों हेड़ी वाले दो चार आदमी मेरे सम्पर्क में आये।

मैंने इस सत्संग के सिलसिले में गुरु पदवी पर आने के पश्चात् ईश्वर के रूप को समझ कि ईश्वर क्या है। जो कुछ वह करता है व कहता है वह बहुत कुछ कहा। आज बताना चाहता हूँ कि ईश्वर क्या है। कल भी कहा था कि ईश्वर हमारी तरह एक बड़ा पुरुष है। जिस तरह हम पैदा हुए हैं ईश्वर भी पैदा हुआ है। जिस तरह हम मरते हैं, ईश्वर भी (प्रलय के समय) मरता है। संसार के प्राणी मुझे काफिर कहेंगे मगर मैं काफिर नहीं हूँ। सत्पुरुष हूँ।

अब तुम सोचो! ईश्वर वैसा ही है जैसे तुम हो। ईश्वर ने तुमको अपने ही रूप पर बनाया है। शास्त्र कहते हैं। उसका भी शरीर है तुम्हारा भी शरीर है। उसका भी मन है, तुम्हारा भी मन है। उसकी भी आत्मा है,

तुम्हारी भी आत्मा है। हमारे शरीर मन और आत्मा के और नाम रखे हुए हैं। ईश्वर के शरीर, मन और आत्मा के ऋषियों ने और नाम रखे हुए हैं। जैसे विराट शरीर के अन्दर अथवा इस भौतिक पदार्थ (माद्दा) के अन्दर अनेक प्रकार की दुनिया है, पशु हैं, कीड़े हैं, वायु है, मिट्टी है। तुम्हारे शरीर में भी दुनिया बसती है। करोड़ों कीटाणु तुम्हारे शरीर में डाक्टरों ने सिद्ध किये हुए हैं। रक्त की एक बूँद में करोड़ों कीटाणु हैं। शौच में करोड़ों कीटाणु हैं, थूक में करोड़ों कीटाणु हैं। तो इस विराट पुरुष में बहुत कुछ है। जब तुम मर जाते हो, तुम्हारा शरीर नष्ट हो जाता है। उसे फूँक देते हैं वह समाप्त हो जाता है। जितनी रचना तुम्हारे अन्तर में है, जितने प्रकार के जीव या कीटाणु हैं वह कीटाणु भी नष्ट हो जाते हैं। जिस समय प्रलय होती है यह विराट पुरुष भी नाश हो जाता हैं। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा सब नष्ट हो जाते हैं। इनको भी प्रलय है। इनकी भी आयु है। इस समय जितनी सृष्टि है, जिस तरह तुम्हारे शरीर के समाप्त होने से तुम्हारे शरीर के कीटाणु, रक्त के, वीर्य के, मूत्र के, मल तथा थूक के कीटाणु सब नाश हो जाते हैं, उसी प्रकार जब ईश्वर मरता है (अर्थात् प्रलय होती है) तो सब कुछ नाश हो जाता है।

तुम कहोगे मैंने कह दिया कि ईश्वर मरता है। क्या तुम्हारे शास्त्र नहीं मानते कि प्रलय होती है। मैं कुछ शास्त्रों से तो नहीं कह रहा। मेरी वर्णन शैली अलग है। बात वही कह रहा हूँ जो तुम्हारे ऋषि कह गये मगर तुम्हारी खोपड़ी में बात बैठती नहीं। इस बात को बिठाने के लिये सन्त और फकीर की महिमा है ताकि उनके सत्संग में जाकर तुमको असलियत का ज्ञान हो जाये। ईश्वर की पूजा की जाती है। किसी सन्त

की पूजा हजारों गुना बढ़कर है क्योंकि ईश्वर के मन्दिर में जाकर केवल पूजा करते रहने से तुमको ईश्वर का ज्ञान नहीं होगा। इसलिये सत्संग की महिमा है। सत्संग भी उसका हो जो ईश्वर के रूप को जानता हो। मैं सौ फीसदी तो ईश्वर के रूप को नहीं जान सका मगर नब्बे पिचानवें फीसदी जानता हूँ।

जिस तरह से ईश्वर का शरीर मरता है अर्थात् प्रलय होती है मन की, यह विराट पुरुष जल में बदल जाता है। तुमने पुराण पढ़े होंगे। इसी तरह ईश्वर का मन भी मरता है। प्रलय की भी कई किस्में हैं। प्रलय हर समय होती रहती है दुनिया में ,यह तारागण टूटते रहते हैं। साइन्स भी सिद्ध करती है। यह ब्रह्मा, विष्णु, महेष भी मर जाते हैं। इनकी आयु है। शास्त्रों में पढ़ो। ब्रह्मा की आयु लिखी है। ब्रह्मा भी जागता है और सोता है। पृथ्वी भी जागती है और सोती है। ईश्वर ने हर वस्तु को अपने ही रूप का बनाया है। जब तुमको कुआँ खोदना होता है तो ज्योतिषी बताता है कि पृथ्वी सोई हुई नहीं होनी चाहिये। सोते हुये को जगाना पाप है। कहते हैं कि पृथ्वी सोई हुई है कुँआ मत खोदो। मुहुर्त नहीं निकालते। ब्रह्मा की भी आयु है। ब्रह्मा एक नहीं अनेक हैं। अनेक विष्णु हैं, अनेक शिव हैं। वह ईश्वर की सृष्टि में पैदा होते हैं और मरते रहते हैं।

तुम कहोगे मैंने क्या कह दिया। क्या इसका कोई प्रमाण है?

भागवत प्रमाण है। जब कृष्ण का अवतार हुआ तो कृष्ण गायों और बछड़ों को लेकर घर आ रहे थे। ब्रह्मा को पता लगा कि विष्णु ने

अवतार लिया है। ब्रह्मा ने सोचा कि यह छोकरा है, ग्वाला है। यह अवतार कैसे हो सकता है इसकी परीक्षा करनी चाहिये। उसने बछड़े चुराकर कहीं छिपा दिये। कृष्ण ने और बछड़े बना लिये। जब फिर ब्रह्मा आया तो वही बछड़े यहाँ थे। फिर ब्रह्मा विष्णु भगवान के पास इस भेद को पूछने के लिये जाने लगा। यह पुराण की गाथा है। विष्णु के दरबार पर जाकर जब द्वारपाल ने पूछा कि तुम कौन हो? उत्तर दिया गया कि ब्रह्मा हूँ। वह कहता है कि तुम किस देश के ब्रह्मा हो। क्या इससे सिद्ध नहीं होता कि अनेक ब्रह्मा हैं। यह ईश्वर की सृष्टि है। शब्द है:-

क्या है ईश्वर, किस में ईश्वर, है कहाँ रहता है वह।
करता क्या है धरता क्या है, और क्या कहता है वह।

ईश्वर कहाँ रहता हैं? यह सारा संसार ईश्वर का ही रूप तो है। यह जितना विराट पुरुष है सब ईश्वर का ही रूप हैं। जिस तरह तुम्हारे शरीर के अन्दर करोड़ों जीव रहते हैं ऐसे ही यह सृष्टि उसमें बसती है। वह यदि यह ढूँढ़ना चाहें कि फकीरचन्द का रूप क्या है तो वह क्या ढूँढ़ेगा। जितने तुम्हारे अन्तर में कीटाणु (germs) तुम से ही उत्पन्न होते हैं तुम्हारे ही वीर्य, रक्त थूक से उत्पन्न होते रहते हैं। फिर उस ईश्वर के रूप को क्या समझ सकते हो कि फकीर चन्द की कितनी बड़ी देह है, नहीं जान सकते। ऐसे ही इंसान में कहाँ शक्ति है कि वह ईश्वर के सारे रूप को जान सके। करोड़ों ब्रह्मा, करोड़ों विष्णु, करोड़ों सूर्य, करोड़ों चन्द्रमा! है कोई अन्त? है अन्त तो बताओ! जब तक कोई आदमी इस ईश्वर की सृष्टि से बाहर नहीं निकलेगा वह जन्म - मरण से बच नहीं सकता।

मैं आपको ईश्वर का रूप बता रहा हूँ। ईश्वर दाँये-ईश्वर बाँये,

ऊपर ईश्वर, नीचे ईश्वर। चन्द्रमा ईश्वर का रूप, सूर्य ईश्वर का रूप, पृथ्वी ईश्वर का रूप, वायु, जल, ईश्वर का रूप ही तो हैं और कोई जगह यदि है तो मुझे बता दो!

घट घट में पट पट में तट तट में।

हर जगह ईश्वर ही है। यदि यह ज्ञान मिल जाये तो जीव जो उस ईश्वर को पूजने के लिये मन्दिर में जाता है, मसजिद में जाता है, भागता दौड़ता फिरता है वह भाग दौड़ समाप्त हो जाती है। यह जो भाग दौड़ है हमारे मन के अन्तर, यही भव सागर है। इसलिये दाता दयाल ने मुझे सन् १९२१ ई. में समझाया था:-

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहिं जानूं।
मैं फकीर का नाम दीवाना, सबसे बढ़कर मानूँ॥
मेरे साध हैं शब्द विवेकी, संत वंश कुल शोभा।
चरण कमल मस्तक पर धारूं प्रेम मगन मन क्षोभा॥
एक घड़ी साधु की संगत, कटे मोह जम फाँसी।
मेरी नजर में साधु फकीरा! सत चित आनन्द रासी॥

तो साधु और फकीर की संगत से क्या मिलता है? तुम मोह माया में दौड़े-दौड़े फिरते हो, ये माईयाँ दौड़ती फिरती हैं कि मेरे पुत्र नहीं हैं मेरे पास अमुक वस्तु नहीं है। यह सब ईश्वर की रचना का एक खेल है। जिसको साधु या किसी संगत से ईश्वर के रूप का पता लग जाता है, फिर वह इस जगत में मोह ममता में नहीं फँसता। यह है संत की महिमा। तुम तो ईश्वर के दरबार में जाकर, मन्दिर में जाकर माँगते हो पुत्र, पुत्री, धन। ये आशायें तो तुमको संसार में और फँसाती हैं। तुम्हारा बेड़ा पुत्रों ने पार नहीं करना। आज ही एक स्त्री मेरे पास आई। उसके दो

पुत्र हैं- इन्जीनियर हैं। वह दुखी है। जिनके पुत्र है वह भी दुखी और जिनके नहीं है वह भी दुखी। जिन के पास धन है वह भी सुखी नहीं, जिनके पास नहीं है वह भी सुखी नहीं। यह संसार ईश्वर की रचना है। इसलिये कल मैंने कहा था कि ईश्वर ने हम पर जुल्म किया है। हमको संसार में पैदा करके हमको दुखों और सुखों में फँसाया है। काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार! इसमें हमको जकड़ दिया है और हम हाय-हाय करते हैं। माया का चक्र है। किसी को कोई शिकायत है किसी को कोई! कोई सुखी है तो बता दो मुझे। बाहर में निस्संदेह बड़े-बड़े आदमी अपने को बड़ा दानी, बड़े लैक्चरर या विद्वान सिद्ध करें मगर इनके अन्तर की क्या दशा है! एक एम. पी. हैं (नाम नहीं लेना चाहता) उनके पत्र मेरे पास आये। वह कहते हैं कि दुनिया में मेरे जैसा अशान्त कोई नहीं है। क्या यह धन सम्पति तुमको सुखी कर सकते हैं? सुख जो है वह विचार में है, विवेक में है। गुरु नानक साहब की वाणी है:-

सुख है बिच विचार दे सँतां शरण पयां।
नानक दुखिया सब संसार, सुखिया वह जो नाम अधार॥

यह संसार दुख की खान है। इससे तुमको कौन बचायेगा? कोई सन्त या महात्मा फूँक मार कर नहीं, मंत्र पढ़ के नहीं, किन्तु सच्चा ज्ञान देकर, ईश्वर का रूप बता कर। यदि वह तुम्हारी समझ में आ जाये तो फिर तुमको शान्ति मिल सकती है। सन्त महात्मा तुमको क्या देते हैं? शान्ति। तुम यह समझते हो कि संत पुत्र देते हैं। इन संतों के तो स्वयं अपने पुत्र नहीं होते। दुनिया भूल भ्रम में पड़ी हुई है। संतों के असली धर्म को लोग बिल्कुल नहीं समझते। तुम उसको संत कहते हो जो तुम्हारे अन्तर में बाबा फकीर प्रगट होता है। तुम संत उसको मानते हो

जो तुम्हारे स्वप्न में प्रगट होता है, जो किसी लड़के को परीक्षा हाल में पर्चे हल करा जाता है अथवा स्वप्न में आकर बच्चा दे जाता है। यहाँ यह घटना हुई कि नहीं? मैं तो आया नहीं उस स्त्री को स्वप्न में बच्चा देने के लिये। वह कौन था। वह ईश्वर का कानून था। चार दिन के जीवन के लिये झूठा मान प्रतिष्ठा लेना नहीं चाहता। बात को पर्दे में रख कर सरसों हेड़ी वालो! तुमको लूट के खा जाता। यदि मैं इस रहस्य को न बताता तो तुम अपना तन,मन, धन सब मेरे अर्पण करते। पिछली बार जब मैं आया था तो किसी स्त्री का एक लड़का बीमार था मोतिझरा से। उसने उसको कहा, बाबा आयेगा तुमको प्रशाद दे दे दूंगी। उस लड़के के अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ। उसने उसको कोई गोली दी। आधे घंटे के बाद जब माँ आई तो बच्चा कहता है बाबा आया था और गोली दे गया और उसका बुखार उतर गया। मैं आपको सच कह रहा हूँ कि मैं उस बच्चे के अन्तर नहीं गया। तुम इसलिये बाबा फकीर को संत कहते हो, मेरी पूजा करते हो, साल के साल यहाँ बुलाते हो कि मैं उस लड़के के अन्तर गया था, उसको दवा देने के लिये। यह तो ईश्वर का कानून है। तुम्हारे कर्म की फिलोस्फी है।

ईश्वर ने दुनिया में क्या किया? स्वयं आशा में था। अपनी आशा के वश उसने सृष्टि को रच दिया। वही आशा हम में भर दी। हम आशा तृष्णा में फँस गये। मेरे पास कितने ही लोग आते हैं। एक लड़का आया कहा १० वर्ष से बीमार हूँ। मैंने कहा छोटी उम्र में ब्रह्मचर्य को नष्ट किया होगा। उसने मान लिया। तो फिर बाबा क्या करे! तुमने ईश्वर के कानून को भंग कर दिया। तुम ईश्वर द्रोही हो गये। ईश्वर के अनेक रूप हैं। सबसे बड़ा रूप तुम्हारे अन्तर तुम्हारा ईश्वर का रूप वीर्य है। ईश्वर

सृष्टि रचता है अपनी शक्ति से। तुम अपने वीर्य की शक्ति से सृष्टि बनाते हो। तुम ईश्वर को लाख गाली दो तुम्हारा कुछ न बिगड़ेगा मगर जब तुम ईश्वर नियम को भंग करोगे, दण्ड मिलेगा। जो व्यक्ति अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं करता, वह ईश्वर द्रोही है। इस समय संसार में इस शिक्षा की आवश्यकता है। ईश्वर ने इस दुनिया के नियम बना दिये। हम जो ईश्वर की सृष्टि में दुख -सुख उठाते हैं उससे शान्ति देने के लिये, तुम्हारे भ्रमों के दूर करने के लिये संत की महिमा है।

साधु की संगत गुरु की सेवा, सहजहि काम बनावे।
जिस पर सृष्टि साधु की पड़ गई, फिर जग योनि न आवे॥

कहते हैं गुरु की सेवा, साधु की सेवा-मैंने गुरु की सेवा की, साधु की संगत की। साधु कौन है? जो अपने मन को साधते हैं, जो अपने मन के विचार को एकाग्र करते हैं। जब लोगों ने अपने मन के विचार को एकाग्र किया और उसका परिणाम मुझको सुनाया तो उस समय से मैं इस चक्र से निकल गया।

साधु की संगत गुरु की सेवा, सहजहि काम बनावे
जिस पर साधु की दृष्टि पड़ गई, फिर जग योनि न आवे॥

जिन लोगों ने अपना अनुभव मुझ को बताया मैं उनको साधु समझता हूँ। मेरी आँखें खुल गईं कि असलियत क्या थी। मेरे मन के अन्दर जितनी कल्पनायें उठती हैं, विचार उठते हैं, अब मैं उनको सत नहीं मानता। जब मैं उन विचारों को सत नहीं मानूँगा, तो जगत मेरा क्या करेगा। जब उस लड़के के अन्तर मैं गोली देने नहीं आया तो मेरे अन्तर जितने भी रूप रंग पैदा होते थे मैंने उनको सत माना हुआ था मगर वह

वास्तव में थे नहीं। जिस तरह उस लड़के ने माना था कि फकीरचन्द उसके अन्तर पैदा हुआ या उस स्त्री के अन्दर फकीर चन्द का रूप प्रगट हुआ। वह फकीर चन्द तो था नहीं, फिर वह कौन था? उसके अपने मन की कल्पना थी। अपने ही मन की कल्पना में समस्त संसार फँसा हुआ है। यदि यह ज्ञान हो जाये तो वह मन की कल्पनाओं में नहीं फँसेगा। उसको वह माया समझेगा, हैं नहीं मगर भासती है। तुम्हारे शास्त्र यही कहते हैं। माया है नहीं मगर भासती है। तो यह ज्ञान मुझको सरसों हेड़ी वालो! तुम से हुआ अथवा दूसरों से हुआ। मैं उदाहरण आप लोगों के देता हूँ, दूसरों के क्या दूँ।

मेरे पास तो अनेकानेक उदाहरण हैं। मेरे जीवन के अनुभव के बहुत से उदाहरण हैं।

तो यह सारा संसार ईश्वर का रूप है। मन की कल्पना जीतना है। यह सब ईश्वर का रूप है। अव्याकृत का रूप है। इससे तुमको कौन निकालेगा? कोई सच्चा संत । कैसे निकालेगा? विवेक देकर, समझ देकर, सच्ची बात बताकर ताकि तुम मन की कल्पनाओं में न फँसो मगर तुम लोग तो आकर मुझे भी अपने जाल में घसीटते हो। तुमको जो कुछ मिलना है, अपने कर्म का फल मिलना है। तुम्हारे अपने कर्म का कानून है। तुम मेरी बहिन बेटियो, भाई हो। मैं धोखा नहीं दे रहा। तुम क्यों अज्ञान में आकर लुटे जा रहे हो। तुम्हारे कर्म में संतान है तो उसको कोई रोक नहीं सकता। जैसा तुम्हारा ख्याल है वैसा तुम्हारा हाल है।

जिस तरह हमारा मन है उसी तरह इस ईश्वर का भी मन है। जिस तरह से तुम जन्म लेते हो, इसी तरह ईश्वर भी जन्म लेता है। तुम सोचो!

इस विराट पुरुष को कौन पैदा करता है? सृष्टि की उत्पत्ति को सोचो। पहिले योग वशिष्ठ को पढ़ो। पहिले संकल्पमय संसार होता है। वह संकल्प ईश्वर करता है, जब उसका संकल्प घना हो जाता है, सृष्टि की उत्पत्ति होती है, वह आशा का बीज बड़ा बारीक होता है। तुम देखो तुम साढ़े पाँच फुट के जवान हो। जब तुम मां के पेट में आये थे तो आँख से न देखे जाने वाले किन्तु खुर्द बीन से दिखाई आने वाले एक सुपरमेटोरिया कीटाणु थे। तुम अपनी असलियत को देखो। तुम आज ५ -११ फुट के जवान होकर, बलवान होकर,बुद्धि वाले होकर दुनिया में कितना काम करते हो। कितना खेल कर रहे हो। तुम्हारी असलियत क्या है? बाप के वीर्य में एक बहुत छोटे कीटाणु की। इसी तरह जब सृष्टि हुई, इस विराट पुरुष का भी सूक्ष्म रूप से बीज था। उस बीज से ऐसे ही उत्पत्ति हुई जैसे सुपरमेटोरिया कीटाणु से तुम लम्बे चौड़े जवान होकर कितना अहंकार करते हो। ईश्वर का विराट रूप इसी तरह से बनता है जिस तरह माँ के पेट में एक छोटे से कीटाणु से।

वह छोटा सा कीटाणु है वह क्या है? वह है ओ३म् के ऊपर बिन्दी। वह बिन्दी ओ३म् का आधार है। ओ३म् की आवाज तभी निकलेगी जब उस बिन्दी का उच्चारण साथ होगा। वह जो बिन्दी है वह है महा शून्य-निर्विकल्प समाधि। निर्विकल्प समाधि से जब तुम्हारा उत्थान होता है तब तुम्हारा मन रचना करता है। निर्विकल्प समाधि को सन्तों ने महा सुन्न कहा है। कोई शून्य कह देता है, कोई ओ३म् की बिन्दी कह देता है। यह शब्दों का अन्तर है। वह जो बीज है या बिन्दी है या निर्विकल्प समाधि की अवस्था है, उससे संसार उत्पन्न होता है। शास्त्र भी यही कहते हैं। वह सृष्टि को रचता है। जब नाश कर देता है तो

अपने रूप में सो जाता है। मैं संस्कृत का विद्वान नहीं हूँ। मैं अपना भाव बता देता हूँ। इसलिये संन्तों ने तुमको यह बताया कि यदि इस सृष्टि के चक्र से वचना चाहते हो तो अपने अन्दर निर्विकल्प समाधि में जाओ या दसवें द्वार में जाओ। यह सन्तों का मार्ग है। यही ऋषियों का मार्ग है।

तो सन्त महात्मा क्या करते हैं? वे तुमको ज्ञान देते हैं, समझ देते हैं और तुमको इस ओ३म् की शिक्षा देते हैं। तुम तो ओ३म् को यह समझते हो कि जो शब्द मुँह से ओ३म्, ओ३म् कहते हैं वह हैं। अ उ म् शब्द हैं, उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय। ख्याल का पैदा होना, स्थिर रहना और फिर नष्ट हो जाना, इसका नाम है ओ३म्। जिसके सहारे पर यह उत्पत्ति या सृष्टि पैदा होती है, वह बिन्दु है। ओ३म् और है तथा ओ३म् का बिन्दु और है। अ, उ, म, तो रचना कर देता है। बिन्दी महाशून्य है। उसका एक स्थान है। ऊपर में भी एक स्थान है। इस ब्रह्माण्ड के ऊपर भी एक स्थान है और तुम्हारे दिमाग में भी है, क्योंकि ईश्वर ने तुमको अपनी शक्ल पर बनाया है। जो ब्रह्माण्ड है सो पिंड है। जो ऊपर है वह तुम्हारे अन्तर है।

तो सन्त और महात्मा तुमको नाम देते हैं। क्या नाम देते हैं? ईश्वर का रूप बताते हैं फिर तुमको कहते हैं कि सुमिरन ध्यान ईश्वर का रूप बताते हैं। फिर तुमको कहते है कि सुमिरन ध्यान करते रहो। दसवें द्वार या महाशून्य में जाओ। ओ३म् की गति प्राप्त करो। केवल मुँह से ओ३म् ओ३म् करने से तुम वहाँ नहीं जा सकते। अपने मन में संकल्प जो पैदा करते हो, वह खेल करते हैं। जब तक उनको नाश नहीं करोगे, वह समाप्त नहीं होंगे। तुम उस ऊपर की बिन्दी पर या दसवें द्वार में पहुँच नहीं सकते।

आज का विषय था–क्या है ईश्वर, किसमें ईश्वर है कहाँ रहता है वह। वह घट घट में है। तुम में है, बाहर में है, जमीन में है, आकाश में है, सब जगह है। तुम उस ईश्वर की खोज करो जो तुम्हारे अन्तर है। यदि बाहर में खोज करोगे कभी सफल नहीं होगे। उसकी खोज अन्तर में करो क्योंकि ईश्वर सृष्टि की रचना करता है और वह करता है जब – जब इस बिन्दु से उठता है। इसलिये जो आदमी साधन करते हैं अपने अन्तर दसवां द्वार या निर्विकल्प समाधि लगाते हैं, उनकी वृतियों में शक्ति हो जाती है। वहाँ से उठकर जो उनका संकल्प है, वह अवश्य पूरा होना चाहिये, क्योंकि उनके संकल्प में शक्ति होती है। ऐ सरसों हेड़ी वालो! मेरे ऊपर भी न रहो कि बाबा तुमको तार देगा। बाबा ने तो तरने की या तारने की विधि बताना है। तरना या तारना तुमने आप है। साधन नहीं करोगे तो कैसे तरोगे! इसलिये तुमको हित से कहे जाता हूँ। अपनी पूजा नहीं कराना चाहता। अपने सामने मत्थे टिकाना नहीं चाहता।

जिस तरह से हम संकल्प करते हैं और हमारे संकल्प नाश हो जाते हैं इसी तरह ईश्वर का जो अव्याकृत रूप है कुछ समय के बाद यह भी नाश हो जाता है। हमारे हिन्दू शास्त्रों ने कल्प–कल्पान्तर रखे हुये हैं–सतयुग, त्रेता, द्वापर कलियुग को शायद एक कल्प कहते हैं। मैं तो पूरी तरह जानता नहीं मगर यहाँ ईश्वर के शरीर की भी आयु है। यदि आयु न होती हिन्दू शास्त्र कल्प–कल्पान्तरों का वर्णन न करते। हमारी आयु १०० वर्ष की मानी है। हमारे एक घंटे की आयु में कितने ही जीव पैदा हो जाते हैं और फिर एक घण्टे बाद मर जाते हैं। वह बच्चे भी पैदा करते हैं, खा पीकर भी चले जाते हैं और घण्टे के बाद मर जाते हैं। वर्षा

ऋतु में दीपक जलता है। पंतगे पैदा होते हैं उन पर जलते हैं और मर जाते हैं, तो किसी की आयु क्षण मात्र की और किसी की कल्प - कल्पान्तर की। ईश्वर के मन की आयु जो है वह कल्प -कल्पान्तरों की है जिसका हिसाब ही नहीं लगाया जा सकता मगर हमारे ऋषि बड़ी उच्चकोटि के बुद्धिमान थे। उन्होंने ब्रह्मा तक की आयु का हिसाब लगाया। देवता बूढ़े भी होते हैं, जवान भी होते हैं। तुम ज्योतिष को पढ़ो। ज्योतिषी किसी को बताता है कि वृहस्पति का ग्रह पड़ा हुआ है मगर वह अब बूढ़ा हो गया। उसका इतना प्रभाव नहीं होगा मैं यह प्रमाण हिन्दू -जाति के शास्त्रों का दे रहा हूँ।

ईश्वर भी जन्मता और मरता है। अव्याकृत भी शरीर होता है। जिस तरह सो जाने के बाद फिर जागते हो और रचना करते हो, इसी तरह ईश्वर भी सोता और जागता है और रचना करता है। मैंने आपको बता दिया कि ईश्वर भी तुम्हारी तरह एक इंसान है। वह जन्मता और मरता है। तुम अपनी ओर देखो! तुम, दुनिया में आ गये। तुम्हारे शरीर में करोड़ों जीव पैदा हो जाते है और शरीर के अन्दर ही वह जन्मते रहते हैं और मरते रहते हैं। करोड़ों अरबों जीव तुम्हारे जीवन में पैदा हुये और मर गये। डाक्टर कहते हैं शरीर के अन्दर कोश या खाने (cells) हैं। हजारों नये-नये कोश (cells) पैदा होते रहते हैं और पुराने कोश(cells) मरते रहते हैं या नष्ट होते रहते हैं।

तुम्हारा शरीर ईश्वर की सृष्टि का एक नमूना है। जिस तरह से तुम्हारी सृष्टि में कितने ही जन्मते और मरते रहते है इसी तरह से ईश्वर की सृष्टि में लाखों ही ऋषि - मुनि आते हैं और मरते रहते हैं। करोड़ों प्रकार की रचना होती रहती है और इसी में खपती रहती है। यह है

ईश्वर का रूप।

क्या है ईश्वर! तुम्हारी तरह एक इंसान है। उसको बनाया किसने? जब यह हमारा बिन्दु हमारे शरीर के अन्दर माँ के पेट में आ जाता है तो प्रकृति का खेल उसको बनाता है। उसमें एक वासना है बनने की। वह अपनी वासना से अपने शरीर को आप बना लेता है। बाहर में प्रकृति उसकी सहायता करती है। इस प्रकार वह जो बिन्दु है, वह आदि बिन्दु है जिससे ईश्वर बना है। वह स्वाभाविक ही रचना करता रहता है। उसमें प्राकृतिक गुण है। वह क्या वस्तु है। वह है ईश्वर की आत्मा, प्रकाश या नूर। जिस प्रकार सूर्य की किरणों का प्रकाश यहाँ आकर पृथ्वी पर आ जाता है तो रचना करता है। वनस्पति, स्थावर हीरे जवाहरात सब उत्पत्ति करता है। इसी तरह से एक प्रकाश या नूर रूपी आत्मा है जो अपने घर से अलग हुआ, उसने अपनी रचना की। जिस तरह से मेरे पिता के वीर्य में जो छोटा सा कीटाणु था जो आज फकीरचन्द बन कर बोल रहा है, वह अपने बाप के वीर्य से अलग हुआ। उसने अपनी रचना बनाई, इसी प्रकार महान अस्तित्व है-परम तत्व। उसके बीज में से एक किरण निकलती है जिसको ईश्वर कहते हैं वह बाहर की दुनिया की अपनी रचना बनाता है। बाप के वीर्य में करोड़ों कीटाणु हैं। साईंस सिद्ध करती है कि आदमी के एक बार वीर्य के (Discharge) निकलने से उसमें इतने कीटाणु होते हैं कि संसार में जितनी स्त्रियाँ हैं सब उससे गर्भवती हो सकती हैं। यह डाक्टर कहते है। इसी तरह वह परम तत्व आधार है जिसको संत 'सत' कहते हैं।

प्राणायाम का मंत्र है-ओ३म् भू र्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्यम् तत सवितुर वरेणियम....। वह जो परम तत्व आधार है उसमें से एक

किरण आती है। वह अपनी त्रिलोकी बनाती है। शरीर में आकर जब वह विराट पुरुष में आ जाता है। कहते हैं कि ईश्वर ने अपने-आपको ९ भागों में बाँट दिया। सूर्य, चन्द्रमा, आदि जो वह कहते हैं, यह सब नवग्रह हैं। उस विराट पुरुष ने अपने -आपको नौ भागों में बाँट लिया। हमारे अन्दर में ९ द्वार हैं। हमने अपने शरीर को ९ द्वारों में बाँटा हुआ है। जो ईश्वर में है वह हमारे में है। यह नौ ग्रह काम करते हैं। हमारे अन्दर भी यह नौ जो हमारे अंग हैं यह नौ द्वार इस शरीर में काम करते हैं। यहाँ मैं कहने का साहस करता हूँ कि यहाँ जिस तरह से एक बाप के कितनी ही संतान हो जाती है इसी तरह से मालिके कुल, सर्वाधार, या परम तत्व की करोड़ों किरणों, करोड़ों ईश्वर , करोड़ों सूर्य, चन्द्र और तारागण करोड़ोंर चनाब नार हीह ँ ।व र्तमानर् वज्ञानब ताताह ै ि क(Solar system) सौर्य मण्डल है। करोड़ों सूर्य, चन्द्रमा तारागण हैं जिनकी गणना करना मानव बुद्धि की शक्ति में नहीं है। अनुमान लगा सकते हो। गुरु नानक साहब का कथन है:-

लख आकाशां आकाश।
लख पातालां पाताल॥

तुम एक ऐसी रचना कर रहे हो कि जिसका हिसाब नहीं। यहाँ तो कितनी ही रचनायें हैं। क्या कोई अन्त पा सकता है किसी का? मनुष्य दौड़-दौड़ कर थक जाता है। बुद्धि काम नहीं करती।

वह ईश्वर की रचना हमारे अन्दर से उत्पन्न हुई। सुपरमेटोरिया कीटाणु हमारे बाप के वीर्य से बाहर निकला। इस वीर्य में शक्ति या (Energy) है। शरीर की शक्ति या एनरजी तो सूर्य से है, हमारा प्राण

सूर्य से आया है। फिर चन्द्रमा, बुद्ध-ग्रह शक्ति हैं जो हमारे अन्दर में पैदा होती हैं। इसी तरह से समस्त ब्रह्माण्ड में अनन्त रचना है। वह जो शक्ति प्रकाश में थी, जिस प्रकाश ने या जिस ब्रह्मा ने रचना की, उसका जो आधार है जिसको संत सुरत कहते हैं वह इस कलेवर में आकर इस ईश्वर के राज्य में फँसी हुई है। इस ईश्वर की सृष्टि में रहते हुये, जन्म है, मरण है, दुख है सुख है। कल मैंने आपको कहा था कि देवता भी दुखी रहते हैं। राक्षसों और देवताओं की लड़ाई रहती है। संत उस सुरत को या मनुष्य को शिक्षा देते हैं, जो इस ईश्वर की सृष्टि से दुखी हो चुका है, जो अपने घर सदा सर्वदा के लिये अटल जीवन प्राप्त करना चाहता है जहाँ न जन्म है न मरण है। अमर जीवन (eternal life) है, जहाँ से फिर इस चक्र में हम न आयें। तुम लोग तो उस जीवन को मेरे पास नहीं आये हो। तुम लोग तो पुत्रों के लिये धन के लिये मेरे पास आये हो।

मैं दाता दयाल के दरबार में गया था अपने घर जाने के लिये। मुझे रास्ता नहीं मिलता था अपने घर जाने का। मैं तो ईश्वर की सृष्टि में फंसा हुआ था। दाता ने यह सत्संग का काम दिया था अपने घर जाने के लिये। जब मुझे यह निश्चय हुआ कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मैं सोचने के लिये विवश हुआ कि वह कौन जाता है। वह तुम्हारा मन जाता है। तुम्हारी मन ईश्वर के अव्याकृत रूप का अंश है। तुम्हारा शरीर इस विराट पुरुष का अंश है। तुम्हारी आत्मा ईश्वर की आत्मा का अंश है जब तक आत्मा में रहोगे, जम्म-मरण से नहीं बच सकते, क्योंकि आत्मा ही जन्म के चक्र में आती है।

इसके लिये क्या करना है? मन और रूपों के विचार को छोड़ कर अपना इष्ट वह रखो जो रचना नहीं। तुम प्रेम करना चाहते हो, जो आदर्श

या आइडिल अपने सामने रखना चाहते हो, उसको कूटस्थ मानो। जो न जन्मता है न मरता है। अपने आप में स्थित है। इसलिये जब तक कोई आदमी अपना इष्ट वह रखेगा जो सृष्टि की रचना करता है, वह आवागवन से नहीं बच सकता। अपना इष्ट बजाय बाबा फकीर के तुम वह रखो वह ऊंची सत पद, सत अलख और अगम, जो अजर और अमर है, जहाँ न मृत्यु है न जीवन है। तुम कहोगे वह क्या अवस्था है । यह तो मैं नहीं वर्णन कर सकता क्योंकि यह तो करनी का विषय है और रहनी का विषय है। जब तक करोगे नहीं, बुद्धि से समझने का विषय नहीं है। इसलिये किसका तुमको सुमिरन करना है, किस का ध्यान करना है, किस गुरु को तुमने पूजना है, वह बताता हूँ।

मैं समझता हूँ मैं ऊँचा बोल रहा हूँ। मैं जो कुछ कह रहा हूँ यदि उसकी समझ आ जाये कि असलियत यह है तो यदि तुम अपने जीवन में उस अवस्था तक नहीं भी पहुँचे और अन्त समय में यह ज्ञान रूप गुरु यदि आ गया कि असलियत यह है तो तुम इस चक्र से बच जाओगे। अन्त मता सो गता। उसको तुम ब्राह्मण ही मानते हो। जो आदमी अन्त समय में बाबा फकीर को याद करेगा और बाबा फकीर उसको लेने आयेगा, वह अपने अन्तर अमर या कूटस्थ घर में नहीं जा सकता है। बाबा फकीर की यह दाड़ी –मूँछ नहीं ले जा सकते क्योंकि यह जो रूप तुम्हारे अन्तर में प्रगट होगा यह तुम्हारे मन का माना हुआ कल्पित है।

मैं यह भाषण तुमको क्यों दिये जा रहा हूँ? क्योंकि हम महात्माओं ने तुम लोगों के अज्ञान का अनुचित लाभ उठाया है। तुम देखो संत मत की गद्दियों में करोड़ों रुपये लग गये। विभिन्न आश्रमों में

करोड़ों रूपया लग गया। केवल इस ख्याल से कि अन्त समय में गुरु महाराज आकर के तुमको सतपद पहुँचा देंगे। मेरे अनुभव में तो यह आया है कि मैं किसी को मरते समय लेने नहीं जाता जैसा कि लोग कहते हैं कि मैं मरते समय उनको पालकी में ले गया अथवा जहाज लेकर आ गया। इस तरह का प्रोपेगँडा करके निबल अबल , अज्ञानी जीवों का धन दौलत लूटा गया है। जब तक मनुष्य को सच्चा गुरु ज्ञान नहीं मिलता और तुमको अपने रूप की असली समझ नहीं आती कि तुम किस घर से आये हो और कौन हो, शान्ति नहीं मिलती। तुम्हारी जो सुरत है वह वस्तु है जो उस आदि जीवन से (Evolution) विस्तार वाद के क्रम में ईश्वर माँग कर लाया है और तुमको यहाँ लाकर फँसा दिया। सहजो बाई कहती हैं:

आरती मेरी गुरु चरनन की।
हरि ने पांच चोर दिये साथा॥
गुरु ने लियो बचाय अनाथा॥
हरि ने चौरासी में गेरी।
गुरु ने काटी ममता मेरी॥
हरि ने आपन रूप छिपायो।
गुरु दीपक ले मोहि दिखायो॥
बन्दनम् गुरु पद बारम्बारा।
जासु कृपा जाइये भव पारा॥

गुरु ने ममता कैसे काटी? उसने तुमको ज्ञान दिया। यही राधास्वामी मत कहता है–

गुरु ज्ञान न पायोरी सखी, तेरी यों ही उम्र बिहानी।

दाता दयाल और बाबा सावन सिंह की आज्ञा थी कि फकीर!

यह काम निर्भय होकर कर जाना। थी तो मेरी अपनी ही इच्छा कि जो कुछ समझ में आयेगा बता जाऊँगा मगर उनकी आज्ञा एक साधन बन गया तुझे अपने कर्म के भोगने का। तुमको कहे मैं जाता हूँ कि तुम्हारा घर वह सत पद है। प्राणायाम मंत्र ओ३म्- भू र्भुवः स्वः यहः जनः तपः सत्यम् तत सवितुर वरेण्यम्.....

अर्थात् सत से परे जो सावित्री रूप प्रकाश है वह जो अजर अमर देश है, वह तुम्हारा घर है। जब तक उसका इष्ट नहीं रखोगे तुम अपने घर नहीं जा सकते क्योंकि तुम तो इष्ट रखते हो बाबा फकीर चन्द का, राम का, कृष्ण का, बंसी बजाने वाले का, शिव का जिसके शरीर से सर्प लिपटे हुये हैं। इन का इष्ट रखने से मनोकामनायें पूर्ण कर सकते हो मगर अपने घर नहीं जा सकते। यही दाता दयाल कहते हैं:-

आया, आया, आया, सत गुरु के सत्संग।
अच्छा किया सत्संग में आया, तज कुसंग चित सुसंग लगाया,
त्याग मोह मद मान और माया, मन नहीं हो अब भंग।

आज दुनिया उलटी हो गई! बजाय इसके कि तुम मेरे सत्संग में आते तुम उल्टे मुझे बुलाते हो। जो इस तरह घर बुलाये जाने वाले गुरु हैं वह भी स्वार्थी हैं, जो लोगों के घरों में जाकर उपदेश देते हैं। दूसरा कदर नहीं करता। जिसको जो वस्तु मुफ्त मिलती है वह उसका सम्मान नहीं(Value) करता। मैंने इस वस्तु को जीवन देकर प्राप्त किया है। यह तो गरज का सौदा है! संत लोग इसलिये अपने आप में ऐब लगा

लेते हैं कि उनके पास हर एक आदमी न जाए। यह जो साधु महात्मा आते हैं पोस्टर लगवाते हैं कि अमुक महात्मा आया हुआ है, यह तो अपने नाम, अपने मान, अपने धन के लिये काम करते हैं। जिसको प्रयोजन होता है वह उनके पास जाता है। अस्पताल में रोगी जाता है। जिसके पैसा पास होता है वह डाक्टरों को फीस देकर घर में बुलाते हैं। हम लोग महात्मा भी फीस लेने जाते हैं।

तुमने बुलाया। तुम्हारे प्रेम की कदर करता हूँ।

तुमको उपदेश दिये जाता हूँ। क्या? अच्छा किया जो सत्संग में आ गये। ऐसा किया करो। वाणी तो सुनो। मैं जो कहता हूँ उसके समझने को कोशिश करो। जब तक तुमको मेरे वचनों की या गुरु के वचनों को समझ न आयेगा, तुमको कोई लाभ नहीं पहुँचेगा। सत्संग में विवेक मिलता है:-

बिन सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिन सुलभ न सोई॥

मगर विवेक की भी श्रेणीयाँ हैं। मैं चला गया पी. एच. डी. के भी आगे। अब जो दूसरी श्रेणी में पढ़ते हैं वह मेरे विवेक को प्राप्त नहीं कर सकते। इस तरह से यह जो सत का ज्ञान है उसके अधिकारी जन साधारण नहीं है। इसलिये अपनी- अपनी श्रेणी में जाओ, यह अच्छा है। मेरा तो कर्म का चक्र है मैं आ गया। मैं तुमको बताता हूँ। वह कहते हैं:-

सुन हित चित्त से गुरु की वाणी।
मनन विवेक सहित कर प्राणी॥

सत को गह कर हृदय में ठानी।
असत से हो जा असंग॥

सत क्या है? तुम्हारा निजस्वरूप सत है। तुम सत हो, जो उस सतलोक से यहाँ आये हुये हो। अपना इष्ट वह सत लोक रखो अथवा निज स्वरूप रखो न कि बाबा फकीर रखो बाबा फकीर ने तुम को सच्चा ज्ञान देना है। मैं तुमको कहता हूँ कि लाखों आदमी मेरा ध्यान करते हैं। वह अपने ही मन की शक्ति से अपनी ऋषि सिद्धि प्राप्त करते हैं और मुझे पता भी नहीं होता, तो यह सिद्ध हुआ कि यह जो ईश्वर का इष्ट तुम बनाते हो दुनिया की वस्तुओं के लिये बनाते हो।

बाहर सतसंग गुरु का कीजे।
अन्तर सुरत शब्द में दीजे॥
साधन का रस आनन्द लीजे।
जैसे पिये कोई भंग॥

यह सुरत शब्द योग है। अन्तर की धुनि है। सृष्टि की रचना पाँच तत्वों से कही गई है। सब से ऊँचा तत्व आकाश है जिसका गुण शब्द है। यही तुम्हारा गरुड़ पुराण कहता है कि यदि इस आवागवन के चक्र से निकलना चाहते हो तो जब तक पार ब्रह्म देश और शब्द ब्रह्म देश से नहीं निकलोगे तुम्हारा आवागवन समाप्त नहीं हो सकता। वही यह राधास्वामी मत तुमको नाम दान देता है। नाम को अपने अन्तर में पकड़ो। इस नाम को तुम तब पकड़ सकते हो जब तुम्हारा मन तुमको नीचे न खींचे। मन तब नीचे नहीं खींचेगा जब तुमको मन के रूप का पता लग जायेगा, जिस तरह से मुझे तुम से ज्ञान मिला। जब से यह ख्याल आया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जीवन बदल गया। मेरे विचार बदल गये, मेरा धातु बदल गया। मेरा रक्त बदल गया। मैं सोचने को विवश हुआ कि मैं तो किसी के अन्तर जाता नहीं, फिर कौन जाता है। यह इसांन का अपना ही मन है। अब जितने मेरे मन में संकल्प – विकल्प होते हैं अथवा तुम्हारे अन्तर बाबा प्रकट होता है, वह है नहीं किन्तु तुम्हारा अपना माना हुआ है। इस तरह से मेरे अन्तर जो संकल्प उठते हैं मैं समझता हूँ यह माया हैं पर हैं नहीं, तो विवश हो जाता हूँ अपनी सुरत को अन्तर में, जो मायातीत अवस्था है, उसमें ले जाने के लिये।

इस मन के संकल्पों से परे तुम्हारी आत्मा है। आत्मा हिरण्यगर्भ का प्रतिबिम्ब है, उसकी अंश है। शुरु –शुरु में प्रकाश में जाना पड़ता है। प्रकाश के आगे फिर शब्द आता है। इस प्रकार का तुम्हारे प्राणायाम मंत्र तथा गायत्री मंत्र में भी उल्लेख है–सावित्री, नूर या प्रकाश। यह मार्ग है घट में जाने का। शुरु – शुरु में प्रकाश को पकड़ो। प्रकाश भी नहीं पकड़ा जाता क्योंकि मन चंचल है। दुनिया की आशायें लगी हैं।

तो यह मार्ग केवल उनके लिये है, जिन को इस संसार से वैराग हो गया है। यह दुनियादारों के लिये नहीं है। मैं राधास्वामी मत का अनुयायी हूँ। वह मत कहता है ज़र, जन, जमीन को मालिक की मौज पर छोड़ कर आओ। यह जितने सत्संगी हैं यह तो जर, जन, जमीन को छोड़ कर नहीं आते किन्तु माँगने के लिये आते हैं। इसलिये पता नहीं इनको संतों ने नाम क्यों दिया। चलो, संस्कार दे दिया। एक जन्म नहीं, दोत ीनज न्मम ेंय हस ंस्कारक भीइ नकोब ैठज ायेगा।त ुमच ूंकि परमार्थी जीव हो इसलिये मेरे पास आये हो। तुमको कहता हूँ कि साधन करो। पहिले अपने अन्तर प्रकाश को प्रगट करो। जब प्रकाश हो

जायेगा तुम आत्म स्वरूप हो जाओगे। तुम्हारी दुनिया अपने आप ठीक हो जायेगी। जो आत्मा में रहता है उसकी दुनिया अपने-आप ठीक होती रहती है। चूंकि आत्मा में या प्रकाश में शक्ति है, वह रचना करता रहता है संसार की। जो प्रकाश में रहता है उसकी मनोकामनायें स्वाभाविक ही पूरी होनी चाहियें।

ऋद्धि सिद्धि नामे की दासी

तुम ब्राह्मण हो। जो ब्राह्मण या व्यक्ति गायत्री मंत्र पढ़कर साधन करते थे, उनकी सब इच्छायें पूरी होती थीं। प्राचीन काल में ऋषि लोग किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते थे क्योंकि वह प्रकाश में रहते थे। उनकी आवश्यकतायें कुदरत स्वयं पूरी करती रहती थी। उनकी आवश्यकतायें भी अधिक नहीं होती थीं। यह है तरीका उस मार्ग में जाने का।

पक्षपात की राह न चलना, द्वेष अग्नि में कभी न जलना॥
नहीं तू हाथ शोक का मलना, मन नहिं उठे तंरग॥

यदि मन के चक्रों में रहोगे तो दूसरे जन्म में आते रहोगे। बच नहीं सकते। जब तक शास्त्रों के अनुसार यह ज्ञान नहीं होता कि यह सब माया है, है नहीं मगर भासती है, तब तक किसी को आगे जाने का अवसर ही नहीं मिलता। यही हिन्दू धर्म की शिक्षा है जो मैं देता हूँ। शब्द मेरे अपने हैं। सारा संसार एक ही सिद्धान्त के साथ बँधा हुआ है। वर्णात्मक शब्दों के अलग-अलग होने से हम भिन्न-भिन्न हो गये। दाता दयाल कहते हैं कि पक्षपात के मार्ग न चलना। सब दुनिया के लिये एक ही मार्ग है। जब समझ आ जाती है तो पक्षपात समाप्त हो जाता है।

भक्ति भाव से सत्संग करना। बद्ध भाव सिर भार न धरना॥
फिर नहीं छुटे जन्मना मरना, सिख साधु का ढंग॥

बद्ध भाव नहीं करना-अर्थात् फँसना नहीं। यदि तुम फकीर चन्द को ही जीवन भर गुरु मानते रहोगे तुम बँधे हुए हो। कोई स्त्री के साथ बँधा, कोई पुत्र के साथ बँधा, कोई फकीरचन्द के साथ बँधा। क्या अन्तर है? मान लो मैं भव से पार नहीं गया और तुम मेरे साथ ही बँधे हुए हो। यदि मैंने दूसरा जन्म लिया, तो लेने देने के सम्बन्ध में फिर मेरे साथ आओगे, जिस तरह मेरा और दाता दयाल का सम्बन्ध था। वे कहा करते थे फकीर! मैं पिछले जन्म में बुद्ध था और तुम मेरे पास भिक्षु थे। चूंकि उस समय में गौतम बुद्ध के साथ मेरा सम्बन्ध था, वही सम्बन्ध यहाँ भी आकर हो गया। इसलिये मैं किसी को फ़कीरचन्द के साथ नहीं लगाना चाहता। न मैं अपने नाम के झंड़े चढ़वाना चाहता हूँ। मैं तो सच्चा ज्ञान देना चाहता हूँ ताकि तुम्हारा कल्याण हो जाये।

सत्संग भया बन्ध का कारण। फिर क्या संगत करे उबारन॥
कैसे हो फिर तरन और तारन, माया करे दिल तंग॥

सुमिरन गुरु के मुक्त रूप का, ध्यान हो निरवानी अनूप का॥
भजन हो शब्द में शब्द कूप का, सहित प्रतीत उमँग॥

गुरु कौन है? सत है, अलख है, अजर अमर है। परम तत्व है। हिन्दू शास्त्र कूटस्थ कहते हैं। अपना इष्ट वह रखना है। यदि वहाँ तक तुम नहीं जा सकते तो जिस गुरु का भी ध्यान करते हो या मेरे ही रूप का ध्यान करते हो और उस गुरु को यह समझते हो कि फकीरचन्द पं० मस्तराम का पुत्र है, होशियापुर में रहता है तो तुम अपने घर नहीं जा

सकते। गुरु का मुक्त रूप है अनामी पद अर्थात् असलियत के ज्ञान को हर समय याद रखना।

गुरु को मानस जानते, वे नर कहियें अन्ध।
दुखी होंय संसार में, आगे जम का फन्द॥
गुरु किया है देह को, सतगुरु चीन्हा नाहिं।
कहें कबीर ता दास को, तीन ताप भरमाहिं॥

गुरु सत पद का आदर्श है। ओ३म् भुर्भुव स्वः महः जनः तपः सत्यम्, यह हिन्दू शास्त्रों में है। राधास्वामी मत के अनुसार गुरु कहाँ रहता है? सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न, भंवर गुफा, सत लोक से आगे।

अकह अपार अगाध अनामी।
अस मेरे प्यारे राधास्वामी॥

जब तक गुरु के ऊपर यह विश्वास नहीं है कि यह वहाँ का (सत से परे की अवस्था का) रहने वाला है, तब तक उस रूप के ध्यान करने से भी तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। इसलिये गुरु को मनुष्य मत समझो। गुरु ज्ञान रूप है। यदि वहाँ तक तुम्हारा विश्वास नहीं जा सकता तो उस गुरु के रूप को यह समझो कि वह परम तत्व ही है।

मेरी सफलता का भेद क्या है? यही है कि मेरे पिछले कर्मों के अनुसार दाता दयाल के स्वरूप पर एक विश्वास आ गया था कि मालिके कुल के अवतार हैं। यही विश्वास हिन्दू -शास्त्रों ने तुमको दिया हुआ है। वह कहते है कि कृष्ण ब्रह्म के अवतार थे। उन्होंने जो खेल किये वह उनके मनुष्य जन्म की लीलायें थीं मगर हम हिन्दू लोग

तो मानते हैं नहीं। हम तो यह मानते हैं कि उन्होंने गोपियों के साथ क्रीड़ा की, मक्खन चुरा कर खाया, आदि-आदि जब तक कोई आदमी कृष्ण को ऐसा समझता है तब तक उसका बेड़ा पार नहीं होता। यदि कृष्ण को मानते हो तो पूर्ण मानो जो सबसे ऊँचा है। तब तुम्हारा बेड़ा पार हो सकेगा।

मत -मतान्तर का रगड़ा झगड़ा, बांधे काल करम का छकड़ा॥
बातों का न बना तू बतंगड़ा, कीट से होजा भृंग॥

कीट एक कीड़ा होता है। भृंगी उसको उठाकर अपने मिट्टी के घर में बाँध देती है और ऊपर से और मिट्टी लगा देती है। उसको डर लगा रहता है। उसका वह ध्यान करता रहता है। वह कुछ समय में भृंगी हो जाता है। ऐसे ही जो आदमी अपने उस मालिक का ध्यान करने वाले हैं जिस प्रकार का उनका आइडियल होगा, उसके वैसे ही रूप होंगे।

क्या है ईश्वर? मैंने बता दिया कि ईश्वर क्या है। वह बड़ा भारी पुरुष है। जब तक कोई आदमी इस ईश्वर के रूप को नहीं समझेगा, वह इस जंजाल से निकल नहीं सकता। हमारा संतों का आइडिल और इष्ट आधार है, कूटस्थ है, परम तत्व है। यही हिन्दू शास्त्रों का भी है-परम तत्व, आधार, कूटस्थ। मैंने प्राणायाम मंत्र से तुमको समझा दिया कि भुर्भुवः स्व.... सत्यम् से परे जो सावित्री रूप गुरु है प्रकाश है उसके दर्शन करो। वह जो सावित्री है वह अमर जीवन (eternal life) है।

तुम स्वयं उस मालिक के अंश हो। तुम परमतत्व के रूप हो। evolution (परिमाणवाद या विस्तारवाद) के क्रम में इस शरीर में आ गये। कोई इंजीनियर बन गया। कोई कुछ कोई कुछ। तुमको अपने रूप

का ज्ञान नहीं। गुरु जीव को उसका अपना रूप बता देता है। तत्वोमसि। यही वेदान्त है, मगर ऐसा कह देने मात्र से तुम वह बन नहीं सकते। वेदान्त गलत नहीं हैं। तत्वोमसि या अहं ब्रह्मासि कह देने मात्र से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा जब तक साधन करके अपने आप को इस शरीर, मन और आत्मा से परे नहीं जाओगे।

--000--

रचना का चक्र

पहिलेम ैनेअ ापकोइ श्वरक ारू पब तायाथ ा।म ेराअ नुभव कहता है कि जब तक मनुष्य ईश्वर के रूप को समझ कर इससे परे नहीं जाता तब तक मनुष्य का जन्म-मरण समाप्त नहीं होता जन्म-मरण केवल इसी सृष्टि में नहीं है, दूसरे लोकों में जो रचना होती रहती है वह भी तो शरीर ही है। कोई यहां नहीं जन्मेगा तो भुव: लोक में जन्मेगा, स्व: लोक में जन्मेगा। कोई किसी अन्य ग्रह में जन्म लेगा।

मैं उस मालिक की खोज करने के लिये निकला था ताकि मैं जन्म मरण से बच जाऊँ। जब इस दीवानगी में था तो दातादयाल को मालिक समझ के पूजता था। उन्होंने मेरे साथ बड़ा खेल खेला। पुस्तकें मेरे नाम लिख दीं परन्तु मेरी समझ में नहीं आता था।

तुम्हारी आत्मा प्रकाश स्वरूप है। इसके बीज से मन बुद्धि चित अहंकार पैदा हो जाते हैं। वही संकल्प घने होकर तुम्हारा शरीर धारण करते हैं। दाता दयाल सन १९२१ में मुझको समझाते हैं कि ईश्वर की सृष्टि क्या है। एक चक्र है जिसमें उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय है। यह रचना है। उनका वह शब्द सुनो कि ईश्वर क्या है। संत उसको काल

कहते हैं:-

काल चक्र है सहज हिंडोला, झूला अचरज न्यारा।
सब कोई झूले झूला चढ़ कर, काल झुलावन हारा॥

यह ईश्वर सबको झुलाता है।

चन्द्र सूर दोऊ गगन में झूले, झुले नौ लख तारे।
जीव जन्तु पृथ्वी में झूले, नर पशु सकल बिचारे॥

राजा झूले रानी झूले, और प्रजा समुदाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर झूले, झूली सब दुनियाई॥

लक्ष्मी झूली दुर्गा झूली, गायत्री महारानी।
देवा झूले देवी झूली, जल थल अगनी पानी॥

काल भी झूला अपने झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे।
वह भी बचा न चक्र से अपने, झूला झूले सारे॥

चढ़ी पतंग तब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे।
कभी मिले तो जमघट देखी, बिछुड़ के हो गये न्यारे॥

एक दशा में नित जो बरते, कोई नजर न आया।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया,ऋषि मुनि बच नहिं पाया॥

पानी भया भाप की सूरत, धाया गिरि कैलाशा।
बरफ बना धारा वह निकली, नीचे किया निवासा॥

यह ईश्वर की सृष्टि है, यहाँ ऐसा ही होता रहता है।

नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊँचे की आशा।

हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा॥

यह ईश्वर की सृष्टि का खेल हर जगह है। पानी समुद्र में जाता है, भाप बनता है, पानी बरसता है, नदियाँ बनती हैं फिर समुद्र में जाती हैं। यह रचना है।

लकड़ी जलकर कोयला हो गई,कोयला राख और माटी।
माटी माटी में नहिं ठहरी, बनो काठ और लाठी॥

विष्ठा अन्न, अन्न भया विष्ठा, सोई सब कोई खावे।
यह प्रपंच है अद्‌भुत न्यारा,कोई बिरला लख पावे॥

तुम मल की गंदगी को खाद के रूप में खेतों में डालते हो।

फिर उसी में अन्न गेहूँ आदि पैदा करते हो। इस तरह यह ईश्वर की सृष्टि का चक्र चलता है।

जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिलीला, कभी ऐसी कभी वैसी।
यह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी वैसी॥

संत इस ईश्वर को इष्ट नहीं बनाते चूंकि इसमें यह चक्र चलता रहता है। न शान्ति मिलती है, न आवागवन छूटता है।

पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी।
कभी जड़ मिल जुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी॥

समझत बने कथन नहिं आवे, मन वानी अलसानी।
कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी॥

एक दशा में कोई न बरते, कभी बैठा कभी दौड़ा।

कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा॥

झूले की है विचित्र कहानी, कथा वार्ता न्यारी।
नर को हम समझावन आये, सुने न बात हमारी॥

दाता दयाल (महर्षि शिव) कहते हैं कि हम जीवों को समझाने के लिये आये हैं मगर हमारी बात को कोई सुनता नहीं।

दुख सुख सुख दुख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया।
द्वन्द भाव ने जगत रचाया, द्वन्द के फाँस फँसाया॥

इस ईश्वर ने द्वन्द भाव से संसार को रचकर हमको फँसाया हुआ है। हाय-हाय करते हैं कि पुत्र नहीं है धन नहीं है। यह सब द्वन्द की रचना है।

मन बुद्धि और चित हकारा, सो झूले की रसरी।
दो लड़ त्रय लड़ चौलड़ बन भाई,जीव निबल को जकड़ी॥
जकड़े माया के फंदे में, रोये और चिल्लाये।
शोर मचाये बहु बिल्लाये, छूटन विधि नहिं पाये॥

हमारी बुद्धि ही है जिसमें हम फँसे हुये हैं। हाय-हाय करते फिरते हैं। तुम नित्य रोते हो।

तब दयाल को दया लागी, संत रूप धर आया।
राधास्वामी अचल मुकामी, शालिगराम कहाया॥

उस अचल स्थान से, जो कूटस्थ है, एक किरण गुरु रूप में आई।

नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चिताया।
जो कोई जीव शरण में आया, अपना कर अपनाया॥

ऐ सरसों हेड़ी वालो! तुम मेरे पास गये थे। मैं अपनी ड्यूटी समझता हूँ तुमको सच्चा ज्ञान बताने के लिये। तुमने तो यह दुनिया का झमेला लगा दिया। तुमने रिश्तेदारों को बुला लिया। क्या इनको इसकी आवश्यकता है?

सुन फकीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सुनाऊँ।
बात जो मेरी मन से माने, इस झूले से बचाऊँ॥

जो मैं कहता हूँ उसको अपने मन से मानो। विचार करो, मनन करो तब तुम इस झूले से बचोगे। मुझे रोटी खिलाने से, मुझे धन देने से, मेरी सेवा करने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। मेरी बात को समझने से होगा। यही राधास्वामी मत है।

राधास्वामी धरा नर रूप जगत में, गुरु होय जीव चिताये।
जिन जिन माना वचन समझ के, तिनको संग लगाये॥

यदि तुम मेरी बात नहीं समझते तो भेड़ चाल सत्संग से क्या लाभ! जैसे आये वैसे ही कोरे चले गये। यह बात जो कहते थे वह मेरी खोपड़ी में नहीं बैठती थी। इस समझ को देने के लिये मुझे यह गुरु पदवी दी थी। अब तुम्हारे तजुर्बों ने कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं जाता मुझे इस ईश्वर का और काल के रूप का ज्ञान हो गया। यह दाता दयाल ने मुझसे जितना खेल खिलाया, यह काम दिया, वह अपने घर जाने के लिये दिया था।

खेल खिलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र समझाऊँ॥

वह विचित्र विधि समझ में नहीं आती थी। मुझे यह गुरु पदवी

देकर खेल खिलाया। बात मेरी समझ में आ गई कि काल क्या है और इससे निकलना कैसे है।

कर सत्संग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधू वन कर साध ले युक्ती, जा झूले के पारी॥

साधू बन कर युक्ति को साधो। मैंने ईश्वर का रूप तुमको बता दिया। काल का रूप बता दिया। कैसे रचना होती है! क्या है? तो जब तक तुम उससे निकलोगे नहीं, यह तुम्हारा चक्र समाप्त नहीं होगा।

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सत संगत में आया।
तेरा दाव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया॥

वह कहते हैं कि तेरा दाव पूरा पड़ा है। सोच समझ कर माया तज! यह माया मुझ से तजी नहीं जाती थी। क्योंकि माया रूप का मुझे पता नहीं लगता था। ए सत्संगियो! ऐ सरसोंहेड़ी वालो! आप लोगों के अनुभवों ने मुझको माया का रूप बताया है तब मुझे माया का रूप समझ में आया है। जो कुछ मेरे अन्तर में संकल्प-विकल्प उठते हैं यह हैं नहीं मगर भासते हैं। जो गोपनीय बात थी। वह स्पष्ट करके वर्णन कर दी। जिनके भाग्य में है वह मेरी बात को समझेंगे।

अब के चूके मौज न ऐसी, त्याग काल की आशा।
आज का साधन आज ही करले, कल को होगा उदासा॥

यह शरीर तुमको मिला है। तुमने मुझे बुलाया। मैं अपनी ड्यूटी समझता हूँ कि तुमको चेतवान कर दूँ। तुम्हारे घर की रोटी खाई हलाल कर चला। कुत्ता जिसका नमक खाता है उसकी चौकीदारी करता है।

अगर रात को चोर आता है तो कुत्ता भौंकता है सावधान कर देता है। गुरु का काम यही है कि चेतावनी दे दे कि माया के चक्र में तुम फँसे हुए हो। संसार को नित्य समझते हो। पुत्र और पुत्रियों को हमेशा अपना समझते हो। जब तक तुम अपना समझते रहोगे इस माया के रूप को, तब तक अपने घर नहीं जा सकते। मेरा काम इतना ही था तुमको चेतावनी देना, वह मैं दे चला।

बार -बार नहिं अवसर प्रानी, काल महा दुखदाई।
जो कोई करे काल की आशा, सो पाछे पछताई॥

यह जन्म बार-बार नहीं मिलता। बड़े भाग्य से यह सुरत मानव चोले में आती है। तुम सोचो! यह दुनिया तो तुम्हारे साथ नहीं चलेगी। क्या यह जमीन, यह जायदादें, यह पुत्र पोते, तुम्हारे साथ जायेंगे? इसके रूप को समझ जाओ। रूप को समझ कर फिर तुम जीवन मुक्त अवस्था में काम करो, कोई दुख नहीं। जब तक शरीर है कर्म तो अवश्य करना है मगर यदि रूप को समझ कर कर्म करोगे तो वह कर्म तुम्हारे लिये दुखदाई नहीं होगा।

राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारण आये।
शीश चरण में उनके झुका कर, अपना काज बनाये॥
राधास्वामी , राधास्वामी, राधास्वामी गाना॥
मन वचन कर्म से भक्ति कमाना, झूले बाहर आना॥

किसी की भक्ति करो शब्द की भक्ति, शब्द ब्रह्म की भक्ति, नाम की भक्ति। अन्तर में जो धुनि होती है उद्‌गीत जो होता है, जो प्रणव है- उपनिषद भी यही कहते हैं-उसको सुनने का नाम राधास्वामी है। मुँह

से जो राधास्वामी गाना है, मन की चंचलता को दूर करता है। इस विषय पर आगे कहूँगा। जितनी मेरी बुद्धि थी उसके अनुसार तुमको बता दिया। यदि तुम में से दो चार आदमी भी समझ जाये, और तुम्हारा जन्म सुधर जाये तो मेरा यहाँ आना सफल है।

रचना का चक्र

क्या है ईश्वर किस में ईश्वर, है कहाँ रहता है वह।
करता क्या है धरता क्या है, और क्या कहता है वह॥

मैं छोटी उम्र से ईश्वर की खोज में निकला था। चूंकि ईश्वर के विषय में अनेक प्रकार के विचार थे। हर एक धर्म सम्प्रदाय वाले की सच्चाई का पता नहीं लगता था। मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर चलूँगा और जो मेरे अनुभव में आयेगा वह बता जाऊँगा। यह जितना खेल मैं खेलता हूँ वह मेरा कर्म भोग है। आज यह मेरा चौथा सत्संग है। मैंने अपने अनुभव के आधार पर आपको ईश्वर का रूप बता दिया। कोई दावा नहीं करता कि जो कुछ मैंने समझा है वही ठीक है। ईश्वर क्या है? दुनिया ईश्वर को पूजती है। वह एक महान पुरुष है। उसका शरीर भी है, उसका मन भी है और उसका आत्मा भी है। वह जन्मता भी है और मरता भी है, जैसे हम जन्मते और मरते हैं।

तुम हैरान होगे कि मैंने ईश्वर को जन्मने मरने वाला बता दिया। शास्त्र तो कहते है कि आत्मा जन्मता-मरता नहीं, फिर ईश्वर कैसे जन्मता मरता है।

हमारा आत्मा प्रकाश स्वरूप है। ईश्वर की जो आत्मा है वह

परमात्मा है। वह महान प्रकाश स्वरूप है। प्रकाश वास्तव में नहीं मरता। मगर वह नीचे आ जाये तो जन्म-मरण लेता है। यदि ऊपर चला जाये तो जन्म-मरण से रहित हो जाता है।

जब वह जन्म-मरण से ऊपर चला जाता है उसको कहते हैं कि आत्मा जन्मता मरता नहीं। मेरा यह भाव है ताकि किसी को गलत-फहमी न हो।

कहते हैं कि आत्मा अजर और अमर है। हिन्दू शास्त्र कहते हैं कि वह प्रकाश स्वरूप है। यही आत्मा जब नीचे आ जाता है तो मन और देह में आकर योनियों में फँस जाता है। वही प्रकाश स्वरूपी आत्मा जब अपने भंडार में चला जाता है तो योनियों समाप्त कर देता है। हमारे आत्मा का उस बड़े भंडार में मिल जाने से हमारे जन्म-मरण की समाप्ति हो गई। इस ईश्वर के आत्मा का प्रलय के समय में अपने रूप में, जहाँ से आया था, उसमें लय हो जाना, यह ईश्वर की मृत्यु हो गई। यह है मेरा भाव, जब मैं कहता हूँ कि ईश्वर भी मरता है। मैंने स्पष्ट कर दिया। किसी को शब्द के जाल में फँस कर संशय करने की आवश्यकता नहीं है।

अब हम जितने आदमी धर्म सम्प्रदायवादी हैं इस खुदा को या ईश्वर को बिना सोचे समझे मानते हैं। समझ किसी को नहीं है कि ईश्वर है क्या? यही बात दाता दयाल ने कही है। क्या है ईश्वर? इसके लिये सत्संग करो।

अब जीवों की श्रेणियाँ हैं। कितने ही आदमियों की बुद्धि इतनी ऊँची जाती नहीं। कोई शरीर तक ही सीमित है। कोई मन तक ही

सीमित है। कोई आत्मा तक ही सीमित है। उसकी पूजा की विधि अलग-अलग है।

जो शरीर तक ही सीमित हैं वह ईश्वर को कैसे पूजें। जिनकी बुद्धि सूक्ष्म नहीं है वह अपने शरीर से ईश्वर के विराट स्वरूप के किसी अंग को पूजें। इसकी सेवा करें। वह ईश्वर की पूजा होगी। आदमी माता की पूजा करता है, स्त्री पति की सेवा करती है, पुत्र पिता की सेवा करता है, देश भक्त देश की सेवा करता है। कोई दयावान ऐसे हैं जो पशुओं की सेवा करते हैं। गौओं की सेवा करते हैं। ऐसी बुद्धि वालों को जो विराट स्वरूप के किसी भी अंश की सच्चे हृदय से निष्काम सेवा करते हैं वह ईश्वर भक्ति है ऐसे जीवों के लिये।

ऋषि अज्ञानी नहीं थे। उन्होंने शूद्रों का यह धर्म बताया था कि ऊँची जाति वालों की सेवा किया करो। शूद्र वह नहीं जो चमार के घर में पैदा हुआ है। शूद्र वह है जिसकी बुद्धि तीक्ष्ण नहीं है। शरीर के बाहर उसका विचार नहीं जाता है चाहे वह ब्राह्मण के घर में ही जन्मा हो। जिस आदमी की बुद्धि तीक्ष्ण नहीं है, किसी बात को समझ नहीं सकता, उसकी दृष्टि तो शरीर तक ही रहेगी। तो उनके लिये ईश्वर भक्ति क्या है? इस शरीर में रहते हुए शरीर से ईश्वर भक्ति क्या है? इंसान इंसान की सेवा करे। यह है ईश्वर भक्ति शारीरिक रूप से। तुम देखो! जिन स्त्रियों ने सच्चे भाव से पति की सेवा की, उनको क्या कुछ नहीं मिला। जिन सच्चे लड़कों ने अपने माता-पिता की सेवा की, उनकी रक्षा हुई।

जिनको इतनी बुद्धि नहीं, उन्होंने विराट पुरुष के पत्थर की सेवा की धन्ना भक्त ने ईश्वर के विराट पुरुष के रूप की अपनी बुद्धि के अनुसार एक पत्थर की ही पूजा की! उसके बछड़े भगवान चुराता रहा।

नाम देव बच्चा था। उसकी बुद्धि तीक्ष्ण तो नहीं थी। उसने विराट पुरुष की एक मूर्ति की ही सेवा की। उसके हाथ से मुर्ति प्रशाद खा गई।

ईश्वर की सेवा–इस दुनिया में जो ईश्वर भक्त हैं, उनको कहता हूँ। मैं चूंकि सन्त सतगुरु वक्त हूँ परन्तु मुझे कोई सुरखाव का पर नहीं लग गया। सतगुरु नाम है सच्चे ज्ञान का, वह मैं देता हूँ। ईश्वर के स्थूल विराट की सेवा, मानव की सेवा करना है। मनुष्य के स्थूल रूप की सेवा करना है। माता, पिता, भाई, पति ,पत्नी राजा तथा दुखी पशुओं की सेवा करना सब ईश्वर भक्ति का एक रूप है।

दूसरा–जिनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है वह स्वामी दयानन्द की तरह मुर्ति को ईश्वर नहीं मानते। गलत वह भी नहीं है और गलत यह भी नहीं है जो प्रथम श्रेणी के हैं। अपनी बुद्धि की अवस्था के या अपनी प्रकृति के अनुसार हर एक आदमी अपना उपास्य देव चुनता है। वह फिर मानसिक पूजा करते हैं। कोई ईश्वर के निराकार रूप को अपने दिमाग में बनाता है कोई साकार रूप को बनाता है। इस साकार रूप को कोई देवी के रूप में मानता है कोई लक्ष्मी के रूप में, कोई शिव के रूप में, गुरु के रूप में मानता है। वह जो साकार का ध्यान करके उसको ईश्वर समझ के मानते हैं उनको भी उसका फल मिलता है। किसी के अन्तर उनके विश्वास के अनुसार बाबा फकीर का रूप प्रगट हो गया। अव्याकृत का ही तो ईश्वर का रूप है। मन से ही ईश्वर का रूप है। उसने फल दे दिया। जैसे तुमने यहाँ देखा। किसी को राम के रूप में फल दे गया। किसी को देवी के रूप में फल दे गया। किसी को मुहम्मद या फरिश्ते के रूप में, किसी को ईसा मसीह के रूप में फल दे गया। यह ईश्वर के अव्याकृत रूप की पूजा है। यह ईश्वर भक्ति है। मैंने यह

भक्ति की है।

अब रह गया हिरण्यगर्भ का रूप! प्रकाश के रूप में आत्मा है। तुम्हारे अन्तर आत्मा है। विराट पुरुष की सेवा अपने शरीर रूपी विराट से करोगे। ईश्वर के अव्याकृत रूप की सेवा तुम मन के साथ करोगे और ईश्वर के कारण रूप आत्मा, परमात्मा, हिरण्यगर्भ की सेवा तुम अपनी आत्मा से करोगे। तुम्हारा आत्मस्वरूपी प्रकाश का बड़े प्रकाश के साथ मेल करने का नाम हिरण्यगर्भ हमको लाभ पहुँचाता है। बिना इस ईश्वर भक्ति के हमारा जन्म निष्फल जायेगा। यही दाता दयाल कहते हैं कि यदि ईश्वर के रूप को नहीं समझते तो हाथ मल कर रोओगे।

जितनी जल्दी हो सके, संगत करो संगत करो।
जिसको सतसंग नहीं, आपति विपति सहता है वह॥

सत्संग में ईश्वर का रूप बताया जाता है और उसकी पूजा बताई जाती है। मैंने चार सत्संगों में आपको ईश्वर का रूप ही बताया। मैं ईश्वरद्रोही नहीं हूँ। मैं तुमको ईश्वर का रूप बता चला। तुम मेरी बातों की क्या कदर करोगे।

भैंस के आगे बीन बजावे, भैंस बैठी चुग लावे।

अन्धों के सामने नाच करो। वह नाच की क्या कदर करेंगे। तुम में से थोड़े आदमी हैं जो विचारवान हैं। यदि वही मेरे सत्संगों के वचनों को समझ जाये तो मैं गनीमत समझूँगा। जिसको ईश्वर के रूप की समझ नहीं आई, और उसने ईश्वर की पूजा का साधन नहीं किया, वह

इस भवसागर में डूबता रहेगा। मैंने जो तीन पूजायें बताईं उनसे तुम्हारे मन को ठहराव रहेगा। मन अधिक चक्र नहीं काटेगा। तुम्हारा जीवन किसी धंधे में गुजर जायेगा। तुम्हारा मन लगा रहेगा। तुम्हारे जीवन में शान्ति रहेगी, आनन्द रहेगा, सुख रहेगा। जो ध्यान नहीं करता, जिसका मन चंचल हो गया है और उसको अपने अन्तर में ईश्वर के किसी रूप के ध्यान का सहारा नहीं है वह हर समय भव सागर में बहता रहेगा क्योंकि मन को ठहराने का कोई केन्द्र नहीं है। तुम्हारा शरीर है, यदि उसको कोई काम नहीं है, बेकार रहोगे, बेचैन रहोगे। छोटे बच्चे होते हैं उनका स्वाभाविक गुण खेलना है। उनको अपने शरीर से किसी दूसरे के साथ जोड़ने का काम मिल जाता है तब यह खुश रहते हैं। उनकी यह अवस्था है।

लाख माँ-बाप कहें कि बाहर मत खेल, घर आजा! वह खेल को नहीं छोड़ता। वह विवश है। हम शरीर रखते हुये, मन रखते हुए, आत्मा रखते हुए ईश्वर की भक्ति करने के लिये मजबूर हैं। भक्ति कहते हैं किसी के साथ जोड़ रखना। शरीर रखते हुए शरीर से दूसरों की सेवा करना, दूसरे शब्दों में जीवन रखते हुए हर समय काम करते रहना, किसी के लिये, यह ईश्वर भक्ति है। (work is worship) (काम ही पूजा है) और काम की पूजा ही ईश्वर का रूप है। प्रेम ही ईश्वर है। बाहर में भी और अन्तर में भी। इससे तुम भव सागर में नहीं बहोगे। यह मेरा अभिप्राय है।

तुमने कब समझा उसे, और कैसे आई यह समझ।
अन समझ दुख अग्नि में, संसार के दहना नहीं॥

जिसका शरीर हर समय किसी उद्देश्य के लिये, किसी की भलाई के लिये काम नहीं करता, जिसका मन किसी रूप के सहारे के साथ नहीं चलता, जिसकी आत्मा उस प्रकाश या उस परमात्मा के साथ नहीं लगती, वह इस भव सागर के दुखों में हमेशा ही ग्रस्त रहता है। कितने ही आदमी रोज आते हैं। सब दुखी आते हैं। क्यों दुखी हैं, क्योंकि उन्होंने ईश्वर का रूप नहीं समझा। उनको ज्ञान नहीं है। इसलिये दाता दयाल कहते हैं:-

जितनी जल्दी हो सके, संगत करो संगत करो।
जिसको सत संगत नहीं, आपत्ति विपत्ति सहता है वह॥

यह है ईश्वर भक्ति। इन तीनों प्रकार की भक्तियों से शारीरिक सेवा तथा मानसिक सेवा, आत्मा को परमात्मा में लगा देने से तुम भवसिन्धु में जीवन सुख पूर्वक व्यतीत कर सकते हो मगर इस भवसिन्धु से पार नहीं जा सकते। ईश्वर की इस तीन प्रकार की सेवा करने से तुम जीवन भली प्रकार बिता सकते हो मगर जीवन से निकल नहीं सकते। क्यों? क्योंकि यह जो ईश्वर है जो प्रकाश उस बड़े देश से, जो समस्त रचनाओं का भंडार है या आदि है, सत है, निकला हुआ है। वह अपनी रचना आप करता है। संसार को रचता है। जब तक उसके चक्र से तुम नहीं निकलोगे, तुम भवसागर से नहीं निकल सकते।

जिस तरह तुम्हारे अन्तर में तुम्हारा प्रकाश आत्मा है वह इस मन और देह में आकर अपना खेल करता है। तुम्हारा प्रकाश स्वरूपी आत्मा तुम्हारे अन्तर का हर समय तुम्हारे मन के अन्तर तरह-तरह के विचार अच्छे या बुरे फुराता है, इसी तरह वह ईश्वर जो उस के अस्तित्व से निकलकर, जिसने अपना यह संसार बनाया है....सूर्य, चन्द्रमा, तारे, भू

मंडल, वैसे ही वह काम करता है।

मैंने कल आपको कहा था कि ईश्वर एक ही नहीं है किन्तु इस रचना में करोड़ों हैं। तुम दुनिया की रचना को देखो। तुम्हारी दृष्टि तो इस चमड़े की देह के अतिरिक्त कहीं जाती नहीं। साइंस सिद्ध करती है कि इस सूर्य से परे अनेक सूर्य हैं और एक-एक सूर्य की किरण को दूसरे ग्रह तक जाने में हजारों वर्ष लग जाते हैं। शायद एक मिनट में वह किरण सत्तर या पिचत्तर हजार मील जाती है। कई तारे ऐसे हैं जिनकी किरणें चली हुई हैं मगर उनकी किरण अभी यहाँ पहुंची नहीं। कितनी महान यह रचना है। हर सौर्यमण्डल अपने-अपने क्षेत्र में (Control) नियंत्रण करता है। इस सूर्य का सम्बन्ध केवल इन नौ ग्रहों के साथ है। इनको नियंत्रण करता है। यह नौ ग्रह उसके चारों ओर फिरते रहते हैं। यह सूर्य अपने नौ ग्रहों को लेकर किसी और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाता रहता है। हर एक नियंत्रण करने वाली शक्ति अपना अलग-अलग काम करती हैं। हम जिस लोक में हैं हम उस ईश्वर की बात आपको करते हैं। देखो वह क्या कहते हैं:-

चार खान चौपड़ जग रची। अंड जेर सेदज उदभिजी।
माया ब्रह्म पुरुष प्रकृति। मन इच्छा खेलें शिव शक्ती॥

वह कहते हैं यह ८४ का चक्र है। संत भी कोई खुदा नहीं होते मैं नहीं मानता कि कबीर को या स्वामी जी महाराज को समस्त रचना का पता लगा होगा। उसकी लीला को तो कोई जान नहीं सकता। इतना अनन्त सागर है। जितना जितना जिसको पता लगा, उतना-उतना अपना अनुभव कह गया। यह सन्त इस मृत लोक में पैदा हुए। उन्होंने इस दुनिया की (Research) खोज की और अपनी खोज को वर्णन कर

गये। इन सन्तों को क्या पता कि करोड़ों सूर्य ऊपर हैं और उनमें क्या हो रहा है। जितना-जितना जिसका क्षेत्र था, जिस-जिस देश में जो पैदा हुआ, उसने उसकी खोज की और अपना अनुभव वर्णन किया। स्वामी जी की जितनी खोज है यह उन तारागणों या ग्रहों की खोज नहीं है। जिस लाइन पर वह आप चलने वाले थे उसके विषय में वर्णन कर गये।

वह कह गये कि इस दुनिया के अन्तर ८४ का चक्र है। इसके उदाहरण उन्होंने दिये हैं। लोग चौपड़ खेलते हैं। उसमें ८४ घर होते हैं। उसके आधार पर उन्होंने अपना अनुभव वर्णन किया है कि इस ८४ के चक्र में खिलाड़ी होकर गोट एक शिव और एक शक्ति, एक ब्रह्म और एक माया, एक पुरुष एक प्रकृति-पुरुष प्रकाश या नूर है और प्रकृति है-जो विचार उससे निकलते हैं, मन बुद्धि चित जो निकलते हैं यह माया है। हम जीवों के साथ यही खेल करते हैं।

ऊपर के लोकों में ८४ कैसी है कैसी नहीं, मुझे पता नहीं लगा। शायद इसीलिये मैं कहता हूँ कि इन सन्तों को भी पता नहीं लगा होगा। लगा हो तो मैं नहीं जानता। मैं इतनी बात कहता हूँ जो मेरी समझ में आई हैं। तो इस चौपड़ के आधार पर स्वामी जी असलियत को वर्णन करते हैं।

सुरत नर्द ता में बहु पची।
धूम खेल की अतिकर मची॥

वह कहते हैं कि इस ८४ के चक्र में ४ प्रकार की रचना होती है-कोई अंडज से, कोई झिल्ली से, कोई पसीने से, कोई उद्भिज अर्थात मिट्टी या खाक से। यह चार खान की रचना है। यह कौन करता है? प्रकाश और संकल्प अर्थात् पुरुष और प्रकृति। इस खेल की धूम मची

रहती है। यह खेल इस दुनिया में हो रहा है–रचना अर्थात उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय।

चार खान चौपड़ जग रची।
अंड जेर स्वेदज उदभिजी॥
माया ब्रह्म पुरुष पिरकिरती।
मन इच्छा खेलें शिव शक्ति॥
सुरत नर्द ता में बहु पची।
धूम खेल की अतिकर मची॥

तुम सुरत को नहीं समझ सकोगे क्योंकि तुम अभ्यासी नहीं हो। मैं इतनी कोशिश करूँगा कि तुम समझ जाओ कि सुरत क्या है। मैं तुमको देख रहा हूँ। तुम और हो। मैं और हूँ। मैं अपने शरीर को देखता हूँ यद्यपि शरीर मेरा ही है, मैं और हूँ और शरीर और है। मैं अपने अन्दर एक रूप बरता हूँ। तुम बाबा फकीर का रूप बनाते हो। वह जो रूप बनाता है वह और है। जो देखने वाली वस्तु है वह और है। तुम अपने अन्तर प्रकाश को देखते हो, जो तुम्हारी आत्मा है। तुम और हो और प्रकाश और है। तुम शब्द को सुनते हो अन्तर में। शब्द और है तुम और हो। वह जो और चीज़ है वह सुरत है।

वह और चीज संसार में आई हुई है। शब्द को सुनते हैं आनन्द लेते हैं। प्रकाश को देखते हैं आनन्द लेते हैं। दुनिया को देखते हैं आनन्द लेते हैं। वह आनन्द लेने वाली, देखने वाली साक्षी कौन है? वह हो तुम। सुरत ऊपर से आती है इस शब्द के द्वारा। फिर तुम शब्द को सुनते

हो और प्रकाश को देखते हो। जब प्रकाश को देखते हो, प्रकाश करता है रचना। तुमको अपनी रचना में फँसा लेता है। तुम्हारा ध्यान इस दुनिया की ओर से अपनी ओर नहीं जाता। इसलिये इस शतरंज में तुम आ जाते हो। तुम गोट बन जाते हो।

वह प्रकाश ब्रह्म है और जो उसकी शक्ति है वह माया है। इसके खेल में तुम अपने आपको भूल कर फँस जाते हो। वह खेल में लाकर तुमको गोटें बना कर अपनी इच्छा के अनुसार जिस घर में चाहे उस घर में चला देता है।

मैंने तुमको बताया गोट क्या है, सुरत कैसे यहाँ बनती है। तुम्हारा आदि घर है अनामी पद, अकाल पद, जहाँ सुरतों का केन्द्र है या राजधानी है। वहाँ से शब्द और प्रकाश के द्वारा तुम आये और इस प्रकाश ने रचना कर दी और तुमको तुम्हारा घर भुला दिया और इस संसार में फँसा दिया। तुम देखते हो कि माईयाँ आती हैं। कोई कहती है पुत्र नहीं है। कोई कहती है मेरी हवेली बिक गई। मेरा यह है मेरा वह है। यह क्या है? तुम्हारी सुरतों के ब्रह्म और माया खेल कराती है। गोटों को इस ८४ के घरों में भेजते हैं। ८४ प्रकार के भान बोध तुम्हारे अन्तर पैदा होते रहते हैं। एक तो यह है। एक बाहर की चौरासी।

तीन गुनन का पासा लीन्ह।
रजगुण तमगुण सतगुण चीन्ह॥

अपने विचारों के भान बोध में हम फँसे हुये हैं। एक तो साधारण बुद्धि के भान हैं जैसे खाना पीना आदि जो शरीर तक सीमित है। एक रजोगुण है। यह अनेक प्रकार के विचार छाँटता रहता है और एक

सतोगुण है। यह तीन प्रकार के मन के भाव हैं जिनमें हमारी सुरत हर समय खेलती रहती है। यह तीन गुण का पासा पड़ा हुआ है। यहाँ चौपड़ का उदाहरण दिया है।

कर्म हाथ से पासे डारे।
भोग अंक ता में विस्तारे॥

कर्म हाथ–वासना से कर्म बनता है। तुम्हारी इच्छाओं, वासनाओं के प्रभाव से तुम फँसते हो। यह माई इंजीनियर की माँ है। यह कहती है मेरे पुत्र मेरा ख्याल नहीं करते। यह क्या है? यह है कि इसकी सुरत इसी में फँसी हुई है। दुख–सुख, मृत्यु–जीवन, चिन्ता–फिक्र, शोक–आनन्द यह सब इन तीन गुणों से तुम्हारे कर्मों के अनुसार तुमको मिलते हैं। सतोगुण प्रबल है तो थोड़ा आनन्द मिल गया। रजोगुण प्रबल है तो चंचलता आ गई। तमोगुण प्रबल है तो मूढ़ता आ गई।

झूठी बाजी जानी सच्ची।
कोई पक्की कोई मारे कच्ची।

मुझे पता नहीं लगता था कि वह झूठी बाजी है। जब मैं यहाँ आया था तो उस लड़के और उस स्त्री के अन्तर प्रगट हुआ था मगर वह बाबा फकीर तो था नहीं। वह उनके मन की कल्पना थी। तुमने उसको सच्चा मान लिया। तब मुझको विश्वास हुआ कि मेरे अन्तर में जितने संकल्प विकल्प उठते हैं सब झूठे हैं। सत्य नहीं है मगर सत्य भासते हैं। स्वामी जी की वाणी है–

आदि माया कीन्ही चतुराई।
झूठी बाजी सांच दिखाई॥

यह ऊँची बात है। तुममें से कोई आदमी मेरी इस बात को समझ नहीं सकता।

नर्द सुरत चौरासी घर में।
भरमत फिरे दुख और सुख में॥

हारे ब्रह्म और जीती माया।
जीव नर्द बहु विधि दुख पाया॥

वह जो सुरत है इस झूठी बाजी में आकर उसको सत्य समझ कर दुख–सुख उठाती है। मैं तो तुम्हारे अन्तर गया नहीं और तुम मुझको देख कर प्रसन्न हो गये। यह झूठी बाजी साँची हो गई। तुम किसी बात की चिन्ता करते हो, यों ही ख्याल बना लेते हो, हाय! यह न हो जाये। वह जो तुम्हारा कल्पित विचार बनाया हुआ है वह है नहीं मगर चूंकि उसको सच्चा माना हुआ है अत: वैसा ही हो जायगा। तुमने झूठी बाजी को सच्चा माना हुआ है। इसमें नरद पिटती रहती है। दुख सुख उठाती रहती है।

हारे ब्रह्म और जीती माया।
जीव नर्द हो बहु विधि दुख पाया॥

हमेशा माया की जीत होती है ब्रह्म की जीत नहीं होती। कभी–कभी होती है। माया की जीत क्या है? तुम्हारे मन के अन्तर हर समय ख्याल ही उठते रहते हैं। विचारों में फँसे रहते हो। यदि मरने भी लगो

तो बाबा फकीर आ गया तुमको लेने के लिये। वह तो है नहीं। तुमको उसको सत समझा। तुमको फिर जन्म लेना पड़ेगा क्योंकि माया जीतती है उस तुम्हारे मरने के समय। मरते समय तुम्हारे सामने प्रकाश नहीं आया या ब्रह्म नहीं आया। तुम्हारे सामने तो बाबा फकीर आया या किसी के अन्तर राम या कृष्ण आया। यदि यह नहीं आये तो किसी के अन्तर बाप आ गया, पुत्र आ गया, सांप आ गया, शेर आ गया। यह सब माया की जीत है। इस माया से निकलने के लिये या ब्रह्म की जीत करने के लिये तुम्हारे लिये गायत्री का मंत्र है। मरते समय मरने वाले के सामने दीपक जलाते हैं। क्यों? ताकि उसको ब्रह्म का सहारा आ जाये, ख्याल आ जाये, प्रकाश का सहारा आ जाये या ख्याल आ जाय।

आत्मा का ख्याल जीव को आ जाये फिर उसकी क्रिया करते हो। तिनका तोड़ते हो। कहते हो 'जित्र आयो तत्र गच्छ, जिस ओर से आया है उसी ओर को जा। मरने वाले को कहते हो कि भई! तेरा हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। जहाँ से आया है वहाँ चला जा। फिर क्रिया कर्म करते हैं। मैंने पहिली स्त्री का क्रिया-कर्म किया था यहाँ एक मरने वाले की गेहूँ के आटे की मूर्त्ति बनाते हैं। फिर उसके पैर काटते हैं। फिर बाँह काटते हैं। क्यों ऐसा करते हैं? क्योंकि मरने वाले का अगर तुम लोगों से मोह है तो उसको यह निश्चय हो जाये कि तुम दुष्ट हो कि मेरी टाँग काट रहे हो। मेरी बाँह काट रहे हो। जिनको अधिक मोह होता है और जिससे वह प्यार करता है उसको वही वस्तु दे देते है। यह है क्रिया कर्म का अभिप्राय। जीव को इस माया के फंदे से छुड़ाने के लिये यह क्रिया कर्म है। कौन समझता है। रिवाजी क्रिया कर्म करते हैं। फिर कहा है कि

रोओ मत ताकि मरने वाले को तुम्हारा मोह न सतावे। तुम रोओगे तो उसका सूक्ष्म शरीर बाहर निकला हुआ हो तो तुम्हारे मोह में ग्रस्त होगा। फिर तुम्हारे चक्र में आ जायगा। तो हमेशा माया की जीत होती है। शब्द में लिखा है:

हारे ब्रह्म और जीती माया।
नर्द जीव बहु विधि दुख पाया॥
कभी-कभी जीत ब्रह्म जो होई।
नर्द लाल होय ब्रह्म घर सोई॥

चौपड़ के खेल में कभी-कभी गोट पक जाती है। तो उसको बीच में आराम करने को रख देते है। जिस मरने वाले के सामने प्रकाश आ जाता है, वह माया के खेल से बचकर प्रकाश रूप जो परमात्मा है उसमें आत्मा लय हो जाता है, उसमें चला जाता है। मगर प्रकाश का या ईश्वर जो हिरण्यगर्भ रूप है उसका स्वभाव ही रचना करना है। वह जब चाहे उस प्रकाश को संसार में भेज देता है जिस तरह खिलाड़ी पकी हुई गोट को बीच से उठा कर दूसरी गोट को मार देता है। पक्की गोट कच्ची हो जाती है। इसलिये शास्त्रों में कहा है कि मुक्ति एक स्थायी है और एक अस्थायी है। वह जितने जीव हैं, जब ईश्वर की प्रलय होती है, शरी और अव्याकृत नाश हो जाते हैं। वह अपने रूप में चले जाते हैं। हिरण्यगर्भ में तो जितनी आत्मायें हैं सब जाकर समा जाती हैं। जब सृष्टि की रचना करता है वह फिर आ जाती हैं।

फिर इस चौपड़ की बाजी से हमेशा के लिये निकलने को क्या उपाय है। तुमको आवश्यकता नहीं। तुम बेशक मेरे बड़े भक्त हो मगर

तुमको तो संसार में आनन्द की आवश्यकता है। सुख की आवश्यकता है। मुझे थी आवश्यकता इस घर से निकलने की। निकला हूँ या नहीं, यह तो मेरी अन्तिम दशा बतायेगी मगर मैं कोशिश करता रहता हूँ कि प्रकाशरूपी परमात्मा जो है जिसने यह खेल खिलाया हुआ है, उससे परे चला जाऊँ। प्रकाश का स्वभाव रचना करना है। तुम यहाँ बत्ती जला दो। इसका गुण क्या है? उसका प्रकाश बाहर को फैलेगा। प्रकाश का गुण ही यही है कि वह फैलता है। 'ब्रह' का अर्थ बढ़ना, मनन का अर्थ सोचना। ब्रह्म फैलता रहता है, रचना करता रहता है। इसलिये संतों का इष्ट ब्रह्म नहीं है किन्तु सतपद है आगे स्वामी जी कहते हैं–

चौपड़ के बाहर नहिं होई।
निज घर अपना पाये न कोई॥

आदमी ने प्रकाश का साधन किया। आत्मा परमात्मा में मिल गई। परमात्मा क्या है? वह प्रकाश का भंडार है। वह एक बीज है प्रकाश का, जिससे यह रचना होती है। जब तक कोई इस प्रकाश से निकल कर शब्द द्वारा अपने घर नहीं जायेगा तब तक उसका आवागवन समाप्त न होगा। काश! कुदरत मुझको सामर्थ्य दे कि जब शरीर से मरते समय निकलूं तो बाहर निकल के मैं बता जाऊँ कि मेरा क्या परिणाम हुआ। इस समय तो मेरा अपना अनुभव है और वह इस शरीर में रहते हुये वर्णन कर रहा हूँ। मैं कोई बात रोचक और भयानक नहीं कहता। जीवों को रोचक वाणी कह कर अपनी पीछे नहीं लगाता। बड़े-बड़े महापुरुषों के जीवन मैंने देखे हैं- और सुने है। उनका अन्तिम जीवन का हाल मालूम है। कल तुम लोगों ने बताया कि अरविन्द घोष योगी

थे। उनके जितने चेले थे वह उनके योग से प्रभावित थे। वह समझते थे कि यह योग की सिद्धि अरविन्द घोष के कारण है। जब मैं किसी के अन्तर में कुछ करता था। यह तो हर एक जीव के अपने ही विश्वास का परिणाम था। क्या मैं तुम्हारे लड़के के अन्तर में गया कि अमुक दवा खा ले तू ठीक हो जायेगा? क्या मैं उस स्त्री के पास गया बच्चा देने के लिये? ऐसी करामातें योगी लोग अपने से मानते हैं और दुनिया उनके जाल में फँस जाती है। अरविन्द घोष ने अन्तिम आयु में बड़ा कष्ट पाया। दर्द गुर्दा एक हफ्ते रहा। जब मर गये तो चेलों ने कहा कि यह नई करामात करेंगे। १४ दिन तक उनकी लाश सड़ती रही। इस अज्ञान के कारण उन चेलों ने अपने मुर्दे को खराब किया। तुम लोगों ने बताया मुझे तो पता नहीं था कि उनका कोई चेला देव शर्मा वहाँ गया। उसने उनको समझाया कि करामातें तो फिर भी होती रहेंगी अब इस लाश को ठिकाने लगाओ।

ऐसी ही घटना तरनतारन में हुई। वहाँ का एक गुरु था। उसकी एक दो चेली थीं। बड़ी अमीर थीं। बड़ा अन्धविश्वास रखती थीं। कहीं उसने कह दिया कि हम फिर आयेंगे। १५ दिन तक वह लाश वहाँ सड़ती रही। वहाँ पूजा हुई। लाखों रुपया इकट्ठा हो गया। यह दुनिया चमत्कार पसन्द है। फिर पुलिस ने जबरदस्ती, जब दुर्गन्ध आने लगी, उस लाश को जलाया। मेरे लड़के ने 'टाइगर आफ इण्डिया' नामी पत्र में पढ़ा। मुझ को लिखा कि पत्र में पढ़ा है। यदि यह ठीक हो गया तो तुम्हारी, ब्यास वालों की, आगरे वालों की कोई इज्जत न रहेगी। मैं इस रहस्य को जानता था। मैंने एक लेख इस गुरुइज्म के खिलाफ लिखा सारी दुनिया में छपने को।

जब मैं यह कहता हूँ कि मैं सन्त सतगुरु वक्त हूँ, मेरे जैसा सच्चा आदमी झूठ कैसे बोल सकता है। मैं सत् ज्ञान देता हूँ तुम लोगों को तथा संसार को, कि तुम इन योगियों या धार्मिक जगत के चक्र में बुरी तरह से आये हुए हो। यही काल मत है, मन का योग है। संसार को असलियत का पता नहीं है। मैं तो डरता हूँ। पता नहीं मेरा क्या परिणाम हो। यह मेरे वश में नहीं है। यह मेरे कर्मों के आधीन है मगर मैंने इस जीवन में अपने कर्मों को गन्दा नहीं किया। आगे स्वामी जी कहते हैं–

माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई।
खेलें इन नरदन से सोई॥
भरमे नर्द पिटे और कुटे।
दुःख इनका कोई नहिं सुने॥
सभी नर्द पछतावें दम दम।
कैसे छूटें इनसे अब हम॥

जो सुरत दुखी हो जाती है फिर वह पुकार करती है कि मैं इस चक्र से कैसे निकल सकती हूँ। तुम तो इस चक्र से निकलना नहीं चाहते। तुम तो अपने ट्यूबबैल की उन्नति के लिये बुलाते हो कि उद्घाटन कर जाओ। कहाँ सत मत, कहाँ संसार का व्यवहार! इसलिये कहता हूँ कि संतों का मार्ग आम दुनिया के लिये नहीं है। विशेष–विशेष व्यक्ति हैं जिनके लिये सन्त दुनिया में आते हैं। सब के लिये यही मार्ग है जो वेद मार्ग है। प्रकाश में जाओ। तुम इतना ही पहुँच जाओ तो भी तुम धन्य हो।

करें फरियाद दाद नहिं पावें।
रोवें झीकें और चिल्लावें॥

जैसे मैं रोया करता था छोटी उम्र में।

बार बार भर में चौरासी।
कोई न काटे उनकी फाँसी॥
श्रुति स्मृति और वेद पुरान।
सब ही मारें उनकी जान॥

हर एक धर्मसम्प्रदाय अधिक से अधिक यह करेगा कि नेकी की ओर लगायेगा, धर्म की ओर लगायेगा, परोपकार तथा दान की ओर लगायेगा। वह भी अच्छा है। मगर इससे निकलने का उपाय तुमको कोई नहीं बताता है। वह उपाय सन्त बताते हैं कि सत्संग करो, ईश्वर के रूप को समझो। इस ईश्वर ने, माया और ब्रह्म ने तुमको बुरी तरह से अपने जाल में फँसाया हुआ है। इससे चोरी–चोरी निकल जाओ। विरोध मत करो। चोरी से निकलना क्या है? केवल अपने अन्तर शब्द ब्रह्म को पकड़ो, नाम को पकड़ो। बस! दुनिया के सारे काम करो। प्रेम रखो, नेकी करो। परोपकार करो मगर इनमें अपने आपको फँसाओ नहीं। दान दो मगर दान का अहंकार मत करो। अपने आपको नाम की डोरी से बाँधो। मैंने कल भी कहा था कि शब्द आकाश का गुण है। आकाश एक तो पृथ्वी मंडल का है–आकाश, अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी का, एक तुम्हारा जो मन है इसमें भी इन पाँचों तत्वों का प्रभाव रहता है। यदि पृथ्वी तत्व तुम्हारे मन में न हो तो उस समय तुम बाबा फकीर का रूप नहीं बना सकते। अब तो तुम बना लेते हो। फिर बाबा फ़कीर का रूप बदल कर मकान आ जाता है। तो मन पृथ्वी तत्व से ही बनता है।

ऐसे ही कारण प्रकृति या कारण तत्व में भी, या प्रकाश में भी यह पाँचों तत्व कारण रूप से मौजूद रहते हैं। इस प्रकाश का जो कारण रूप आकाश है उसकी जो आवाज है उसका नाम है नाम। उसको पकड़ो। फिर जाओगे अपने घर।

मैंने सत्संग इस शब्द से शुरु किया था–

क्या है ईश्वर किस में ईश्वर कहाँ रहता है वह। मैंने इन सत्संगों में आपको ईश्वर का रूप बता दिया और इस ईश्वर की रचना में रह कर जो ईश्वर की पूजा और सेवा करनी चाहिये वह भी बता दी। यदि इस ईश्वर की रचना से पार जाना चाहते हो, तो वहाँ जाने के लिये नाम है, क्योंकि यह ब्रह्म और माया तो खेलते ही रहते हैं। तुम्हारी सुरत को यह अपने घर नहीं जाने देंगे। वहाँ जाने के लिये शब्द है या नाम है। यही सन्देशक बीरद ेग येि कत ुमस ुरतह ो।त ुमउ सस तलोकस ेज ो (Eternal) अनादि लोक है वहाँ से आये हो। संत कहते हैं कि यदि तू अपने घर जाना चाहता है तो तुझको रास्ता बताते हैं।

हो तुम हंसा सत्त लोक के परे काल बस आई हो।

यह उसको कहा गया है जो इस जन्म–मरण के दुखों से दुखी हो चुका है और जीवन से उकता गया है। तुम इस जीवन को नहीं चाहते। मेरे पास बूढ़ी– बूढ़ी स्त्रियाँ आती हैं। अपने आप तो मरने वाली हैं मगर हाय पोती! हाय पोता! बस इसी में तुम्हारा जीवन जाता है और इस जन्म मरण के चक्र से निकल नहीं सकते। ऐसा माया का जाल इस ईश्वर ने बिछाया हुआ है कि हम को निकलने नहीं देता। कोई निकलना भी नहीं चाहता। लाखों में कोई कोई है! गुरु नानक का कथन है:

नानक कोटिन में कोऊ, नरायन जिन चेत।

कबीर कहते हैं कि ऐ सुरत! तू यहाँ दुख–सुख भोगती है। तेरा असल में यह घर नहीं है। यह तो ईश्वर की रचना का घर है। तू अपने घर चल!

हो तुम हंसा सत्त लोक के, परे काल बस आई हो।
मने स्वरूपी देव निरंजन, तुम्हें राख भरमाई हो॥

तुम्हारे मन ने ही तुमको भरमाया हुआ है। तुम्हारे विचारों ने ही, इस माया ने ही तुमको भरमाया हुआ है। मुझे भी तो भरमाया हुआ था। मैं तो निकल गया। समझ आ गई। यह तो भगवान जानता है कि निकलूँगा या नहीं। क्या पता मरते समय बेहोश हो जाऊँ। मगर इस जीवन में समझ आ गई।

पांच पचीस तीन के पिंजरा, तिहि में राख छिपाई हो।
तुमको बिसर गई सुधि घर की, महिमा अपन जनाई हो॥

तुम अपने घर की सुधि भूल गये। तुमसे तो इसने अपनी ही पूजा कराई। परसों मैंने बताया था कि काल अपनी पूजा कराता है। यही राधास्वामी दयाल कहते हैं:

काल ने अपनी पूजा आप कराई।
काल ने रक्षक कला दिखाई॥

राधास्वामी मत वालों ने इस सन्त मत की शिक्षा को ही बदनाम कर दिया है मगर उनका भी क्या दोष। मैं जो शिक्षा देता हूँ क्या तुम मेरी बात को समझते हो। जब तुम नहीं समझते तो उनके शिष्य उनकी बात

को कैसे समझेंगे। चूंकि उनको अपनी गरज है इसलिये वह भी तुम्हारी हाँ में हाँ मिलाते हैं और कह देते हैं कि हाँ हमने तुमको पुत्र दिया। हम तुमको पार ले जायेंगे।

निरंकार निर्गुन है माया, तुमको नाच नचाई हो।
चर्म दृष्टि का कुल्फा देके चौरासी भरमाई हो॥
चार वेद हैं जाकी स्वासा, ब्रह्मा स्तुति गाई हो।
सो सत ब्रह्मा जगत भुलाये, तिहि मारग सब जाई हो॥

ब्रह्मा ने संकल्प की दुनिया बना कर संसार को रच दिया और सब में माया, संकल्प और आशा भर दी तथा सारे संसार को भूल में डाल दिया। मैंने कहा था कि ईश्वर तुम्हारे अन्तर में वासना भर देता है। सारी दुनिया भूल में पड़ी हुई है।

सतगुरु बहुरि जीव के रक्षक, तिनसे कर सुमिताई हो।
तिनके मिले परम सुख उपजे, पद निरबाना पाई हो॥

कबीर साहब कहते हैं कि किसी सतगुरु से मिलाप करो। किसी सच्चे पुरुष से जो चौथे पद में रहता है, जो मायातीत है, उससे प्रेम करो। मैंने तुमको चार सत्संग दिये। मैंने तुमको दुनिया की ओर आकर्षित अधिक नहीं किया। तुमको इससे निकालने ही की कोशिश की है। गुरु हितैषी होता है। वह जीव को इस संसार में फँसने से बचाने की कोशिश करता है।

तुम लोगों ने बुलाया। मैं आ गया। तुमने तमाशा बना लिया। तुमने रिश्तेदारों को बुलाया। क्या इनको मेरी शिक्षा की आवश्यकता है? कोई दुखी होता है, तुम उसको पकड़ के मेरे सामने लाते हो। यह मेरी बहिन

है, यह मेरी बुआ है इसका मकान नहीं है। देखो! यहाँ हर एक जीव को अपने कर्मों का फल भोगना है।

दाता दयाल को भी पिछली आयु में राहु की दशा आ गई। उनके एक शिष्य नौनिद्धराय ज्योतिषी थे। उन्होंने कहा महाराज! धाम की ऐसी स्थिति बनी कि विवश उनको छोड़ कर अलग होना पड़ा, इसके बाद छः वर्ष जीवित रहे। धाम की ईंट से ईंट बज गई। जब सन्त को भी ग्रह चाल नहीं छोड़ती तो तुम क्या! किस खेत की मूली हो! मैं सन्तों के साथ कभी-कभी इसीलिये सहमत नहीं होता। पलटू साहब जो यह शब्द कहते हैं-

साधो भाई! हम वहाँ के वासी।
जहाँ पहुँचे नहिं अविनासी॥

कितनी ऊँची वाणी है! इस तरह की बातें सुनकर दुनिया उनकी चेला हो गई। जैसे मेरे कहने से किसी को पुत्र हो जाता है तो उनकी भी ऋद्धि-सिद्धि होती होंगी। होता तो होगा दूसरे का विश्वास मगर दूसरे महात्माओं ने यह बात छिपा कर रखी। मैंने स्पष्ट कर दी। इससे क्या हुआ? यही कि पैसा नहीं मिलता। सम्मान नहीं होता। न सही। इस प्रकार की बातें कहने से पलटू साहब का मान हो गया। दूसरे दो साधु थे, उनकी अधिक पूजा देख कर उनको क्रोध आ गया। उन्होंने पलटू साहब को जिन्दा उठा कर तेल के खौलते हुए कढ़ा में डालकर फूँक दिया। अब सोचो! कहाँ गया उनका कथन-

साधो भाई! हम वहाँ के बासी,जहाँ पहुंचे नहीं अविनासी,

इस वास्ते मैं संसार में अवतार लेकर आया हूँ। क्या कहने को? ऐ दुनियादारो! तुमको जो कुछ मिलता है तुमको तुम्हारी नीयत, तुम्हारे कर्म का फल मिलता है। किसलिये हाय हाय करते फिरते हो! पिछले जन्म का जिन पुत्रों से लेना है और उन्होंने देना है तो वह मिलेगा। जिनको तुमने नहीं दिया हुआ, वह तुमको कैसे देंगे? तुम लाख हाय हाय कर लो। लाख रोओ। जितना जिसका पिछले जन्म का सम्बन्ध है उनको उतना ही मिलेगा। न किसी सन्त ने रोकना है न ईश्वर ने रोकना है। ईश्वर का कानून है कर्म का, विचार का। इसलिये संसार को यह कहना चाहता हूँ कि ऐ भोले भाले गृहस्थियो! तुमको धर्म सम्प्रदाय वालों ने, हम सन्तों ने मूर्ख बनाया हुआ है। तुमको समझ नहीं, क्योंकि तुमने सत्संग नहीं किया।

चूंकि मेरी ड्यूटी है निबल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करना इसलिये मैं अपने कर्म भोग वश यह भाषण दिये जाता हूँ। चाहता हूँ तुम इन वचनों को प्रकाशित कर दो ताकि जो जीव इसको पढ़ें, वह यदि सत लोक नहीं जा सकते तो दुनिया में लूट से तो बच जायेंगे। सत लोक तो तब जाओगे जब नाम को सुनोगे। तुम जो भ्रम में आकर मन्दिर, मसजिद और गुरुद्वारों या साधु महात्माओं के पीछे आगे फिरते हो कि कोई तुमको फूँक मार कर तुम्हारा बेड़ा पार कर देगा, इससे तो बच जाओगे। यही कबीर कहता है:

सतगुरु बहुर जीव के रक्षक, तिन से कर सुमिताई हो।
तिनके मिले परम सुख उपजे, पद निर्वाना पाई हो॥

जब तक सतगुरु नहीं मिलता, तुम उसकी संगत नहीं करते, और तुमको जब तक इस दुनिया से बचने की आवश्यकता न हो, तुम अपने घर नहीं जा सकते। हाँ यदि दुनिया से बचने की इच्छा नहीं हैं तो रोज-रोज के सत्संग सुनते रहने से रोज-रोज की मारधाड़ से तुम्हारे दिमाग का शायद रुझान इस ओर चला जाये। कहा है:

सतसंग करत रहो मेरे भाई।
तेरी सहज सहज बन जाई॥

आगे कबीर की वाणी है:

चारों युग हम आन पुकारा, कोई कोई हंस चिताई हो।
कहें कबीर ताहि पहुँचाऊँ, सत्त पुरुष घर जाई हो॥

पता नहीं कबीर का क्या भाव है? चार युगों में आया या नहीं। मगर इतना मैं जानता हूँ कि माँग-पूर्त्ति (Demand and supply) का नियम काम करता है। जब कभी किसी व्यक्ति के मन में किसी वस्तु की सच्ची इच्छा या तड़प पैदा हो जाती है कुदरत उसकी इच्छा को पूरा करने का सामान पैदा कर देती है। जैसे मैं था। मुझे बचपन से इच्छा थी अपने घर जाने की। कुदरत ने मेरे लिये वैसा ही प्रबन्ध कर दिया। मैं गुरु को ढूंढने गया था। मेरे हृदय में प्रबल उत्कंठा थी। ऐ संसार के प्राणियो! सरसों हेडी वालो! आज यह मेरा अन्तिम सत्संग है। आपको नुक्ते बताता हूँ। सच्ची चाह रखो आशा रूपी संसार से। भगवान ने दुनिया बनाई है। आशा ही तुमको फँसाती है और आशा ही पार करती है! यदि इस संसार से हमेशा के लिये पार होने की प्रबल इच्छा है तो कुदरत स्वत: कोई न कोई प्रबन्ध कर देगी और तुमको पथ-प्रदर्शन मिल जायगा।

तुमको किसी गुरु ने ले नहीं जाना है। तुमको चिताना है। यही इस वाणी में आया है।